

GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

Class - VI

छठी कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

Preface.indd 1 22/06/18 4:24 PM

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2018
Reprint - 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024

(Published under Uniform System of School Education Scheme in Trimester Pattern)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2018

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

Preface.indd 2 22/06/18 4:24 PM

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग १, वर्ग ६, वर्ग ९ और वर्ग ११ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृतांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँ है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी विंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखाते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए मेरी ओर से प्रयास है।

1st Std Hindi Language 21-06-2018.indd 4 23-06-2018 11:50:03

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना

(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ भारत खंडमिदिल,
तेक्कण।मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तकिकचिरू पिरैनुदलुम तरितनरून् तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
एत्तिशैयुम पुगळ मण।क्क इरून्द पेरूंद्तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु
सेयल मरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमणि।यम' पे. सुन्दरम पिल्लै

Preface.indd 7 22/06/18 4:24 PM



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



Preface.indd 8 22/06/18 4:24 PM

विषय सूची

TERM - I

		पृष्ट
1.	तमिलनाडु (गद्य)	01
2.	डॉ. भीमराव अम्बेड़कर (गद्य)	06
3.	भोजन और विज्ञान (गद्य)	10
4.	मानव आदर्श (पद्य)	14
5.	तिरुक्कुरल (पद्य)	17
6.	बोलनेवाला तोता (संक्षिप्त अध्ययन)	20
7.	वर्ण(व्याकरण)	21
8.	शब्द (व्याकरण)	23
9.	भाषा (व्याकरण)	26
10.	लालबहादुर शास्त्री (निबंध)	27
11.	व्यायाम का महत्व (निबंध)	28
12.	छुट्टी पत्र (पत्र लेखन)	31
13.	सामान्य वर्तमानकाल (अनुवाद अभ्यास)	32

TERM - II

14.	मौन ही मंत्र है (गद्य)	33
15.	कस्तूरबा गाँधी (गद्य)	37
16.	एक बूँद (पद्य)	41
17.	नीम का पेड़ (पद्य)	44
18.	कपड़ों का आदर (संक्षिप्त अध्ययन)	47
19.	दूध में पानी (संक्षिप्त अध्ययन)	48
20.	लिंग (व्याकरण) 49	
21.	वचन (व्याकरण)	52
22.	काल (व्याकरण)	55
23.	दीपावली (निबंध)	60
24.	अनुशासन (निबंध)	63
25.	आवेदन पत्र (पत्र लेखन)	65
26.	अपूर्ण वर्तमानकाल (अनुवाद अभ्यास)	66

Preface.indd 9 22/06/18 4:24 PM

TERM - III

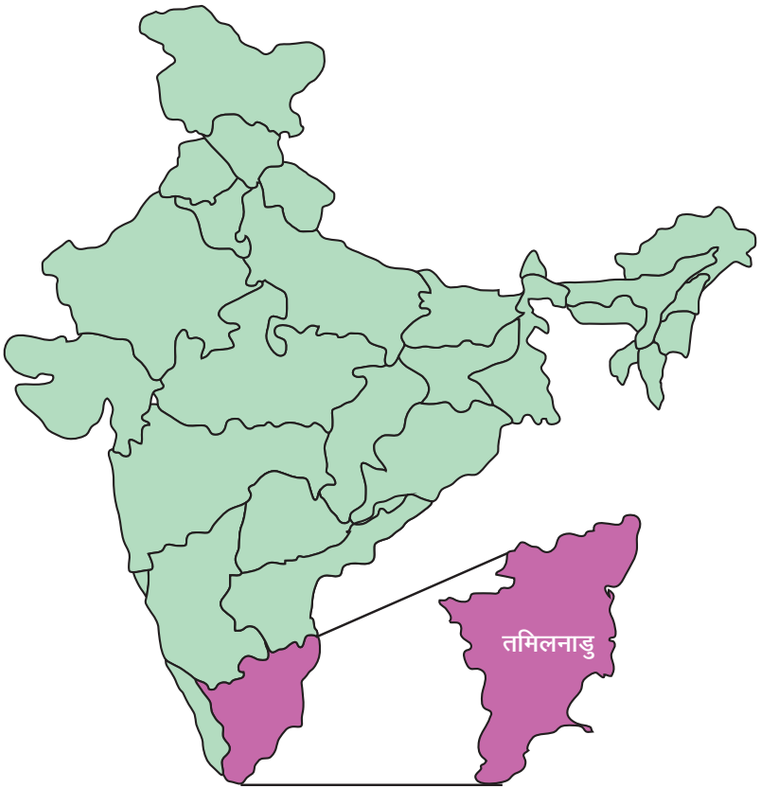
27.	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती (गद्य)	67
28.	निश्चित मार्ग (पद्य)	71
29.	कबीर के दोहे (पद्य)	74
30.	एकता का फल (संक्षिप्त अध्ययन)	76
31.	संज्ञा (व्याकरण)	77
32.	सर्वनाम (व्याकरण)	79
33.	क्रिया (व्याकरण)	82
34.	दूरदर्शन (निबंध)	86
35.	व्यक्तिगत पत्र (पत्र लेखन)	88
36.	भविष्यतकाल (अनुवाद अभ्यास)	89

Preface.indd 10 22/06/18 4:24 PM

TERM - 1

गद्य

1 तमिलनाडु



बंगाल की खाड़ी के किनारे पर भारत का एक प्रांत है तमिलनाडु। इसका इतिहास सुदीर्घ और प्राचीन है। यह प्रांत वास्तुकला के सुन्दर नमूने, संगीत, नृत्य और प्राचीन रीति-रिवाज़ के लिए प्रसिद्ध है। अपनी उत्तम संस्कृति और सभ्यता के कारण भारत में इसका विशेष स्थान है।

पल्लव राजाओं ने द्रविड़ शैली के कई विशाल एवं सुन्दर मंदिर यहाँ बनवाये। ये मंदिर वास्तुकला के बेजोड़ नमूने माने जाते हैं। पल्लव राजाओं के बाद चोल, चालुक्य, पांडिय जैसे राजाओं का शासन रहा। धीरे-धीरे भारत में विदेशियों के शासन का प्रभाव तमिलनाडु पर भी पड़ा। इससे स्वदेशी राजाओं का शासन समाप्त हुआ।

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई है। पहले यह मछुआरों की बस्ती थी, लेकिन आज भारत के चार महानगरों में से एक है। तमिलनाडु में राजधानी चेन्नई के अलावा भी बड़े-बड़े शहर हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। यहाँ सभी प्रकार के फूल, फल एवं धान पैदा होते हैं। तंजाऊर तमिलनाडु के बहुत बड़े जिलों में एक है। इस जिले में धान की इतनी अधिक

Unit 1.indd 2 22/06/18 4:35 PM

खेती होती हैं इसलिए यह दक्षिण के 'धान का खजाना' कहा जाता है।

'भरत नाट्यम' और 'करकाट्टम' दोनों तमिलनाडु की प्रसिद्ध नाट्यकला है। 'नादस्वरम्' यहाँ का प्राचीन वाद्य यंत्र है। इसको शुभ अवसरों पर बजाया जाता है।

तमिलनाडु में कई पहाड़ी क्षेत्र हैं, जैसे कोडैक्कनाल, नीलगिरी, येर्काडु, एलगिरी और कोल्लिमलै। ये पहाड़ी क्षेत्र ग्रीष्म वासस्थल हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

तमिल भाषा का साहित्य बहुत प्राचीन है। कहा जाता है कि पत्थर और मिट्टी के उत्पन्न होने के पहले यह भाषा उत्पन्न हुई है। तमिल साहित्य को भक्ति मार्ग के आलवारों ने भक्ति गीतों से समृद्ध बनाया। तमिल के पाँच महाकाव्य हैं तमिल साहित्य को शैव भक्त के नायनमार और आळ्वारों ने भक्ति भरे कीर्तनों से समृद्ध बनाया। शिलप्पधिकारम्, मणिमेखलै, जीवकचिंतामणी, कुण्डलकेशी और वलैयापति। तमिल का नीति ग्रन्थ 'तिरुक्कुरल' तमिल-वेद माना गया है। क्योंकि इसके रचयिता संत कवि तिरुवल्लुवर ने जाति, धर्म से परे अमूल्य विचार इस ग्रन्थ को पिरोये गये हैं। तमिलनाडु वास्तव में एक आध्यात्मिक स्थल है।

तमिल भाषा सुसम्पन्न और समृद्ध भाषा है। इसलिए भारत सरकार ने इसे सन 2004 'में शास्त्रीय भाषा' घोषित किया है।

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखें :-

(1) वास्तु कला (2) बेजोड़ (3) मछुआरा (4) पर्यटक

(5) वासस्थल (6) शैली

2. विलोम शब्द लिखें :-

(1) प्राचीन (2) विशाल (3) स्वदेश (4) जन्म

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) रीति-रिवाज़ (2) सभ्यता (3) आगमन (4) राजधानी

(5) ग्रीष्म वासस्थल

Unit 1.indd 3 22/06/18 4:36 PM

4. सही उत्तर चुनकर फिर लिखें :-

(1) तमिलनाडु की राजधानी ..... है।

(तिरुच्ची, मदुरै, चेन्नई, कोयम्बत्तूर)

(2) तमिल भाषा नीति के ..... महाकाव्य है।

(चार, दो, पाँच, अनेक)

(3) तमिल का नीति ग्रंथ ..... विश्व-वेद माना गया है।

(तिरुक्कुरल, नालडियार, तोलकाप्पियम, नलवेण्बा)

(4) पहले तमिलनाडु ..... की बस्ती थी।

(मल्हाओं, नाविकों, मछुआरों, बंजारों)

5. सही या गलत

(1) भारत के राज्यों में एक है तमिलनाडु।

(2) तमिलनाडु में चेन्नई मात्र एक बड़ा शहर है।

(3) 'नादस्वरम' तमिलनाडु का प्राचीन वाद्य यंत्र है।

(4) तमिलनाडु का प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं।

6. शुद्ध करें।

(1) आज पूरे भारत में नादस्वरम का भोला भाला है।

(2) 'तंजाऊर' दक्षिण का 'दान का खजाना' है।

(3) अपनी संस्कृति और सभ्यता के कारण भारत में इसका बहुत विशेष स्थान है।

(4) संत कवि तिरुवल्लुवर ने जाति, धर्म से परे अमूल्य विचार इस ग्रंथ में प्रकट किये हैं।

Unit 1.indd 4 22/06/18 4:36 PM

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दें:-

(1) किस तरह भारत में विदेशियों का आगमन होने लगा?

(2) "भारत में तमिलनाडु का विशेष स्थान है"। समझाओ?

(3) तमिलनाडु के कुछ पहाड़ी प्रदेशों के नाम बताइए?

(4) तमिल के"पाँच महाकाव्य" - क्या-क्या हैं?

(5) प्रस्तुत पाठ में "तिरुक्कुरल" - के बारे में क्या बताया गया है?

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दें:-

(1) तमिलनाडु के बारे में पाँच वाक्य लिखो।

(2) भक्ति साहित्य किन भक्तों का योगदान है?

(3) तमिल भाषा के पाँच महाकाव्यों के नाम लिखिए।

(4) संत कवि तिरुवल्लुवर पर एक टिप्पणी लिखिए।

9. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

'तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई है। पहले यह मछुआरों की बस्ती थी, लेकिन आज भारत के चार महानगरों में एक है। तमिलनाडु में चेन्नई जैसे कई बड़े-बड़े शहर हैं। फिर भी यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। यहाँ सभी प्रकार के फूल, फल एवं धान पैदा होते हैं। तंजाऊर तमिलनाडु के जिलों में एक है। यह जिला धान के खेतों से भरपूर है। इसलिए यह दक्षिण का 'धान का खजाना' कहा जाता है।"

(1) चेन्नै पहले किन की बस्ति थी?

(2) तमिलनाडु की राजधानी का नाम क्या है?

(3) तंजाऊर क्यों 'धान का खजाना' कहा जाता है?

(4) तमिलनाडु में क्या-क्या पैदा होता है?

Unit 1.indd 5 22/06/18 4:36 PM

गद्य

2 डॉ. भीमराव अम्बेड़कर



डॉ. भीमराव अम्बेड़कर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को इन्दौर शहर के पास सहू नामक गाँव में एक महार परिवार में हुआ था। एक ज़माने में महार जाति के लोग दलित माने जाते थे। अम्बेड़कर के पिता का नाम रामजीवन मौसाजी अम्बेड़कर तथा माता का नाम भीमा बाई था।

उनके पिता ब्रिटिश फ़ौज में दूसरी ब्रिगेड़ियर रेजिमेंट में सूबेदार मेजर के पद पर काम करते थे। इनकी माता कर्तव्यपरायण, विनम्र, धार्मिक तथा स्वाभिमानी स्त्री थीं।

अम्बेड़कर की प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में दपोली में और हाईस्कूल की शिक्षा सतारा में हुई। वे सन् 1912 में बी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर कर्मठ थे। उनमें अप्रतिम मेधा थी। उनके विचार अहिंसात्मक थे। वे सत्य, न्याय, और निष्पक्षता से अनुप्रेरित थे। उन्हें दुखी व दलितों का व्यापक परिचय था। वे भेदभाव के विरुद्ध थे। मानवीय धर्म के पक्षधर थे। पददलितों को राजनीतिक अधिकार के द्वारा सामाजिक अधिकार भी दिलाना उनका लक्ष्य था। वे राजनीतिक आज़ादी के साथ सामाजिक तथा आर्थिक आज़ादी को भी जोड़ते थे। कमज़ोर वर्ग के प्रति उनमें सहानुभूति थी। वे उनके दुखों को दूर करने का प्रयत्न करते थे। वे जनहित की सरकार चाहते थे। दरअसल वे पीडित मानवता के प्रवक्ता थे। वे सच्चे राष्ट्रप्रेमी और समाज सुधारक थे।

डॉ. भीमराव अम्बेड़कर विद्वान तथा प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। वे नैतिकता को जीवन का आधार मानते थे। वे कहते थे कि मनुष्य केवल रोटी के सहारे जीवित नहीं रह सकता। उसके पास मन भी है, जिसे विचार रूपी खुराक चाहिए। वे भारतीय समाज तथा समस्त मानवता के शुभचिंतक थे। वे स्वयं स्वाभिमानी थे। दूसरों के सम्मान के लिए सदैव उत्सुक रहते थे।

भारत के संविधान की रचना में उनका योगदान बड़ा महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने संविधान की भिन्न-भिन्न समितियों के विचारों को संपादित करके संविधान को सही रूप प्रदान किया। इतने महान व्यक्ति का स्मरण गणतंत्र भारत सदैव करता रहेगा।

Unit 2.indd 6 22/06/18 4:43 PM

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखिए :-

(1) कर्तव्यपरायण (2) दलित (3) विनम्र (4) निष्पक्षता

(5) अनुप्रेरित होना (6) प्रवक्ता

2. विलोम शब्द लिखिए :-

(1) आज़ादी (2) नैतिकता (3) उत्थान (4) उत्तीर्ण

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

1) भेदभाव (2) दरअसल (3) कर्तव्यपरायण (4) मानवता

4. सही जवाब चुनकर फिर लिखिएः-

(1) डॉ. भीमराव अंबेड़कर का जन्म ..... को हुआ।

1. 14 अप्रैल 1981 2. 14 अपैल 1891

3. 24 अप्रैल 1891 4. 14 अप्रैल 1991

(2) डॉ. अंबेड़कर ..... थे।

1. कर्मठ 2. कठोर

3. कालजयी 4. कर्मण्य

(3) डॉ. अंबेडकर स्वयं ..... थे।

1. स्वाभिमानी 2. स्वार्स्वाहीन

3. स्वार्थी 4. स्वजित

(4) डॉ. अंबेड़कर के विचार ..... थे।

1. अस्वाभिक 2. अस्थिर

Unit 2.indd 7 22/06/18 4:43 PM

3. अहिंसात्मक 4. अहंवादी

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) डॉ. अम्बेड़कर के स्कूली जीवन में कौन-सी घटनाएँ घटीं?

(2) डॉ. अम्बेड़कर के गुणों के बारे में आप क्या जानते हैं?

(3) भारत के संविधान की रचना में डॉ. अम्बेड़कर का क्या योगदान रहा?

6. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

"डॉ. अम्बेड़कर राजनैतिक आज़ादी के साथ सामाजिक और आर्थिक आज़ादी भी चाहते थे। उनको कमज़ोर वर्ग के प्रति सहानुभूति थी। वे उनके दुखों को दूर करने का प्रयत्न करते थे। दरअसल वे पीडित मानवता के प्रवक्ता थे। वे सच्चे राष्ट्रप्रेमी और समाज सुधारक थे।"

(1) डॉ. अम्बेड़कर कैसी आज़ादी चाहते थे?

(2) डॉ. अम्बेड़कर किसके प्रवक्ता थे?

(3) डॉ. अम्बेड़कर कैसे व्यक्ति थे?

7. शुद्ध करो:-

(1) डॉ. अम्बेड़कर जनहित का सरकार चाहते थे।

(2) डॉ. अम्बेड़कर लोगों का दुखों को दूर करना चाहते थे।

(3) डॉ. अम्बेड़कर भेदभाव के पक्षधर थे।

(4) डॉ. अम्बेड़कर के पिता के नाम रामजीवन अंबेड़कर था।

8. दो-दो वाक्यों में इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

(1) डॉ. भीमरावजी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(2) डॉ. भीमराव अम्बेड़करजी को पढ़ाई के दिनों में क्यों कई कष्ट झेलने पड़े?

Unit 2.indd 8 22/06/18 4:43 PM

(3) डॉ. भीमरावजी के विशेष गुण क्या-क्या थे?

(4) डॉ. भीमरावजी किसको जीवन का आधार मानते थे और क्यों?

(5) डॉ. भीमरावजी का लक्ष्य क्या था?

9. सही या गलत

(1) डॉ. भीमराव अंबेड़कर के पिता ब्रिटिश फ़ौज में दूसरी ब्रिगेडियर रेजिमेंट में सूबेदार मेज़र के पद पर काम करते थे।

(2) डॉ. भीमराव अम्बेड़कर के विचार हिंसात्मक थे।

(3) डॉ. भीमराव सत्य, न्याय और निष्पक्षता से अनुप्रेरित थे।

(4) डॉ. भीमराव अंबेड़कर भेदभाव के पक्षधर थे।

(5) भारत के संविधान की रचना में उनका योगदान इतना उल्लेखनीय नहीं था।

Unit 2.indd 9 22/06/18 4:43 PM

गद्य

3 भोजन और विज्ञान

शिक्षक : चलो, भोजन के बारे में चर्चा करें। बताओ! हम भोजन क्यों करते हैं?

श्याम : क्योंकि भूख लगती है।

आदित्य : नहीं खाएँगे तो शरीर में ताकत नहीं रहेगी।

शिक्षक : बिलकुल ठीक है, अर्थात् जीवन के लिए भोजन अत्यन्त आवश्यक है। भोजन से शरीर में शक्ति आती है और शरीर का विकास होता है। अब बताओ, भोजन कैसा होना चाहिए?

विजय : अच्छा होना चाहिए।

शिक्षक : 'अच्छा' का क्या मतलब है?

श्याम : स्वाद में अच्छा हो।

आदित्य : ताकत देनेवाला हो।

शिक्षक : वाह! बताओ, चिप्स, कोला, पीज़ा आदि किन-किनको अच्छा लगता है? (बहुत-से बच्चे हाथ उठाते हैं।) इन्हें खाने से क्या फ़ायदा है?

रघु : चिप्स खाने से हमें ताकत मिलती है और हमारी भूख मिटती है।

शिक्षक : चिप्स खाने से हमें ताकत नहीं मिलती। ताकत पाने के लिए प्रोटीन की आवश्यकता है।

रघु : तो क्या चिप्स खाने से कुछ नहीं मिलता?

शिक्षक : हाँ, चिप्स खाने से हमें थोड़ी-सी ऊर्जा तो अवश्य मिलती है। लेकिन चिप्स में कई हानिकारक तत्व छिपे हुए हैं। चिप्स वनस्पति घी में तला होता है। उसका स्वाद बढ़ाने के लिए अधिक नमक मिलाया जाता है। नमक हानिकारक है, इससे रक्तचाप भी बढ़ता है और शरीर का वजन बढ़ता है।

Unit 3.indd 10 22/06/18 4:47 PM

एंटनी : और पीज़ा?

शिक्षक : हाँ, वह भी हानिकारक है। क्योंकि वह मैदे से बनाया जाता है। मैदा सेहत के लिए बिलकुल अच्छा नहीं है।

रघु : पर चिप्स, कोला, पीज़ा के विज्ञापन तो बहुत ही आकर्षक होते हैं। क्या, ये सब झूठ हैं?

शिक्षक : हाँ, विज्ञापन तो व्यापार बढ़ाने का एक तरीका मात्र है। समझ लेना हमारी बुद्धिमत्ता है। वास्तव में विज्ञापन में अभिनय करनेवाले तन्दुलकर और ऐश्वर्या राय कोला नहीं पीते होंगे और पीज़ा नहीं खाते होंगे।

एंटनी : तो कैसा भोजन लेना चाहिए?

शिक्षक : हमें हमेशा संतुलित भोजन लेना चाहिए। भोजन में कार्बोहाइड्रेट और वसा का होना अत्यंत आवश्यक है। दूध, तेल, घी, काजू, बादाम एवं मूँगफली का सेवन करने से कार्बोहाइड्रेट और वसा मिलते हैं।

आदित्य : जी, हम विटामिन का महत्व जानना चाहते हैं।

शिक्षक : सुनो, शरीर को तंदुरुस्त और चुस्त रखने के लिए विटामिन की ज़रूरत है। यह विटामिन हमें ताज़े फलों और सब्जियों का सेवन करने से मिलते हैं।

सभी छात्र : (एक स्वर में) आगे से हम जंक फूड़, फ़ास्ट फूड़, पीज़ा, कोला तथा टीन फूड़ आदि कभी नहीं खाएँगे।

शिक्षक : शाबाश बच्चो! शाबाश!!

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखिए :-

(1) ताकत (2) खाद्य (3) मतलब (4) फ़ायदा

(5) तरीका (6) विज्ञापन (7) तथा

Unit 3.indd 11 22/06/18 4:47 PM

2. विलोम शब्द लिखिए :-

(1) ताकत (2) आवश्यक (3) हानिकारक (4) बढ़ाना

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) भोजन (2) बिलकुल (3) हानिकारक (4) ऊर्जा

(5) वसा

4 सही उत्तर चुनकर फिर लिखिए:-

(1) चिप्स में ———————— तत्व छिपे हुए होते हैं।

(लाभदायक, स्वादिष्ट, हानिकारक, शक्तिवर्धक)

(2) जीवन के लिए ———————— अत्यंत आवश्यक है।

(भोजन, चायश कोला, पीज़ा)

(3) हमें हमेशा ———————— भोजन लेना चाहिए।

(मसालेदार, नमकीन, संतुलित, मांसाहारी)

5. शुद्ध कीजिए:-

(1) हम विटामिन का महत्व जानना चाहिए।

(2) विज्ञापन से व्यापार नहीं बढ़ता है।

(3) पीज़ा, गेहूँ से बनाया जाता है।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) हमें क्यों चिप्स नहीं खाना चाहिए?

(2) हमें विटामिन एवं संतुलित भोजन का सेवन क्यों करना चाहिए?

Unit 3.indd 12 22/06/18 4:47 PM

7. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

अंग्रेज़ों को जब पता चला कि कट्टबोम्मन पुदुक्कोट्टै के जंगलों में हैं, तो उन्होंने वहाँ के राजा को पत्र लिखा। उसमें लिखा था कि कट्टबोम्मन को पकड़ा देने पर अच्छा पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लोभ में पुदुक्कोट्टै के राजा ने कट्टबोम्मन के पास नौकरों को भेजा। वे कट्टबोम्मन का पता लगाकर उनके पास गये और उनसे कहने लगे - "जब से हमारे राजा ने सुना कि आप जंगल में भूखे-प्यासे घूम रहे हैं, तब से वे बड़े दुखी हैं। वे आपको अपने महल में बुला रहे हैं। उन्होंने आपको ले आने के लिए हमें भेजा है। कट्ट बोम्मन पुदुक्कोट्टै के रजा का कपट नहीं जानते थे। उन्होंने राजा को अपना मित्र समझा और राजमहल में जाने को राजी हो गये। कट्टबोम्मन के पुदुक्कोट्टै के राजमहल में पहँचने का समाचार राजा ने फौरन गोरों को दिया। समाचार पाते ही बैनरमन ने एक बड़ी सेना पुदुक्कोट्टै भेज दी। जब कट्टबोम्मन अपने भाई के साथ ऊपर सो रहे थे, तब अंग्रेज़ों ने उन्हें कैद कर लिया।

(1) अंग्रेज़ों ने अपने पत्र में क्या लिखा?

(2) पत्र पढ़कर पुदुक्कोट्टै के राजा ने क्या किया?

(3) नौकरों ने कट्टबोम्मन से क्या कहा?

(4) अंग्रेज़ों ने कैसे या किस तरह कट्टबोम्मन को गिरफ़्तार किया?

Unit 3.indd 13 22/06/18 4:47 PM

पद्य

4 मानव आदर्श

श्री - रामधारी सिंह 'दिनकर'



कवि परिचय: रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर जिले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में सन् 1908 में हुआ। इन्के काव्य में भाषा की प्रखरता और तेजस्विता पायी जाती है। इतिहास उनका प्रिय विषय रहा है।

इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का भाव प्रबल है। भाषा पर इनका पूर्ण अधिकार है। युद्ध की समस्या को लेकर जो प्रबन्ध काव्य लिखा गया वह 'कुरुक्षेत्र' नाम से प्रख्यात है।

आपके अन्य प्रबंध काव्यों में 'रश्मि रथी' और 'ऊर्वशी' उल्लेखनीय हैं। कुछ समय के लिए ये संसद के सदस्य तथा भागलपुर विश्व विद्यालय के उपकुलपति भी रहे। श्री दिनकर हिंदी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। उन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेज़ी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। 24 अप्रैल 1974 को इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

एक मनुज संचित करता है,

अर्थपाप के बल से।

और भोगता उसे दूसरा,

भाग्यवाद के छल से।।

जिसने श्रम - जल दिया उसे

पीछे मत रह जाने दो।

विजित प्रकृति से सब से पहले,

उसको सुख पाने दो।

Book 1.indb 14 21-06-2018 17:12:41

नर समाज का भाग्य एक है

वह श्रम, वह भुज-बल है

जिसके सम्मुख झुकी हुई -

पृथ्वी - विनीत नभ - तल है।

राजा - प्रजा नहीं कुछ होता,

होते मात्र मनुज ही

भाग्य - लेख होता न मनुज को,

होता कर्मठ भुज ही।

कौन यहाँ राजा किसका है?

किसकी कौन प्रजा है?

नर ने होकर भ्रमित स्वयं ही,

यह बंन्धन सिरजा है।

कठिन शब्दार्थ

संचित करना	- इकट्ठा करना	भोगना	- झेलना	विनीत	- नम्र
कर्मठ	- अध्यवसायी	नभ	- आकाश	भ्रमित	- उलझाव

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. मनन करके फिर लिखो।
2. इस कविता का सारांश लिखिये।

कविता का सारांश

प्रस्तुत कविता में कवि दिनकर ने आदर्श मानव के गुणों को प्रकट किया। इसमें 'आदर्श मानव' का सच्चा चित्रण मिलता है।

Book 1.indb 15 21-06-2018 17:12:41

पैसा कमाना मुश्किल नहीं उसे रखना मुश्किल है। मनुष्य पैसा बनाने में अपना सारा जीवन व्यर्थ करके व्यग्र हो जाता है। पाप के बल से संपत्ति कमाता है, वह भी भोगता नहीं न तो उसके संतान, छल से, कपट से पाप की गठरी भर लेता है। पाप मोचन का मार्ग पहचाने में जो उत्सुक हो वही आदर्श मानव है।

आदर्श मानव कठिन परिश्रम करके सच्चाई को अपनाकर जो जीता हो उसको पीछा रहने न देगा। अन्य सब लोगों के पहले परिश्रमी लोगों को सुख पाने देता है। परिश्रमी कभी व्यर्थ नहीं जाता।

अध्यवसायी लोग जानते हैं कि किस्मत अपने हाथ में होती है। श्रम, भुज-बल ही कर्मठों का भाग्य है। ऐसे लोगों के सामने पृथ्वी और नभ नम्र रूप से झुकते हैं मतलब उसका सलाम करते हैं। आदर्श मानव के लिए राजा-प्रजा ऐसी कोई बात नहीं, भेद-भाव नहीं। उसकी दृष्टि में सब मानव हैं। उसको कर्मठों का भुजबल ही भाग्य-बल है।

दिनकरजी के विचार में परिश्रमशील लोगों कि दुनिया में कौन है? किसका राजा और कौन है किसकी प्रजा? क्योंकि सब उन्नति के मार्ग पर होते हैं।

ऐसी दुनिया में सामान्य मानव को किसी प्रकार भ्रम, भय, नहीं होगा। क्योंकि वह तृष्णा, दुनिया, माया से राहत दिया है। जो भाग्य पर जिम्मेदार ठहराता हो वह कामचोर है।

Book 1.indb 16 21-06-2018 17:12:41

पद्य 5

तिरुक्कुरल

श्री - तिरुवल्लुवर



कवि परिचय: तमिल भाषा में वेद की भांति सम्मानित ग्रंथ "तिरुक्कुरल" के रचियता तिरुवल्लुवर थे। समय आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पूर्व माना जाता है। जन-मानस में दर पीढ़ी अंकित उनकी छवि के अतिरिक्त उनके जीवन के संबंध में और कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। तिरुवल्लुवर अपनी पत्नी वासुकी के साथ अत्यंत सादा जीवन व्यतीत करते थे। पत्नी चरखे पर सूत कातती और वे कपड़ा बुनकर बाज़ार में बेचते। उनके शांत स्वभाव, सत्य-निष्ठा और सहनशीलता की सर्वत्र सराहना होती थी।

उनकी सहनशीलता से एक धनी व्यक्ति के पुत्र के जीवन में इतना परिवर्तन आया कि पिता-पुत्र सदा के लिए उनके भक्त बन गये। वे बिना उनकी आज्ञा के कोई काम नहीं करते थे। तिरुवल्लुवर के लोक हितकारी शिक्षाओं से प्रभावित एलेल शिंगन नाम के उस धनी व्यक्ति के आग्रह पर तिरुवल्लुवर ने जीवन के तीन पहलुओं - धर्म, अर्थ और काम पर ग्रंथ लिखना स्वीकार किया। उनका कहना था - 'मोक्ष के बारे में मैं कुछ नहीं जानता'।

Unit 5.indd 17 22/06/18 4:51 PM

वर्षा की महत्ता

1. बिनु पानी संसार का चलता नहि व्यापार।

वृष्टि नहीं तो जगत में टिकता नहिं आचार।।

भावार्थः- पानी के बिना संसार का काम नहीं चलता। वर्षा नहीं तो संसार में अच्छा आचरण नहीं दिखाये देता।

व्यापार - कार्य आचार - सदाचरण वृष्टि - वर्षा

टिकना - ठहर जाना

निस्पहता

2. और-वित्त की कामना करना है क्षय देय।

लोभ रहित धन से सदा होगी जय चिर गेय।।

भावार्थः- दूसरों के धन की कामना करने से अपना क्षय होता। लोभ रहित जो धन हमें प्राप्त होता है। वही हमारे पास निरंतर रहता है।

वित्त - धन क्षय - सड़ना लोभ - लालच चिर - लंबा, दीर्घ

अतिथि-सम्मान

3. अतिथि - भोज के बाद जो खाता बाकी आप।

फसलें उसके खेत में उगती अपने आप।।

भावार्थः- जो अतिथि भोज के बाद खुद शेष खाता है। उसके खेत में फसलें अपने आप उगती है।

व्यापार - मेहमान शेष - बाक़ी भोज - दावत फसल - पैदावार

Unit 5.indd 18 22/06/18 4:51 PM

अनीति से शासन करना

4. अधर्म शासित राज में, विप्र भूलते वेद।

और गायों देती न पय, सचमुच यह है खेद।।

भावार्थः- शासक लोग धर्म का पालन न करके, अधर्मी बने तो वहाँ गायें दूध देना बंद कर देगी और ब्राह्मण लोक वेद का पाठ करना भूल जाएँगे। अर्थात धर्म-ग्रंथों से पथभ्रष्ट हो जाएँगे।

विप्र - ब्राह्मण पय - दूध खेद - दुख

Unit 5.indd 19 22/06/18 4:51 PM

संक्षिप्त अध्ययन

6 बोलनेवाला तोता



एक आदमी के पास एक तोता था। तोते के पंख हरे थे। उसकी चोंच लाल थी। वह बड़ा सुन्दर था। उस आदमी ने उस तोते को 'इसमें क्या शक है' बोलना सिखाया। इसके सिवाय वह तोता और कुछ नहीं बोल सकता था।

एक दिन उस आदमी को कुछ पैसे की ज़रूरत पड़ी। उसने सोचा कि यह तोता बड़ा सुन्दर है। इसे बाज़ार ले जाऊँगा तो कोई इसे ज़रूर खरीद लेगा। वह तोते को लेकर बाज़ार पहुँचा और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा– कोई तोता लेगा? कोई तोता लेगा?

थोड़ी देर में एक अमीर आदमी वहाँ आया। वह तोते को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने तोतेवाले से पूछा– इस तोते का क्या दाम है? तोतेवाले ने जवाब दिया– महाराज, पाँच सौ रुपया। अमीर ने कहा– दाम तो बहुत ज़्यादा है। तोतेवाले ने जवाब दिया– महाराज विश्वास न हो तो आप इस तोते से ही पूछ लीजिए। यह सुनकर अमीर ने तोते से पूछा– क्योंजी; तुम्हारा दाम पाँच सौ रुपया है? तुरंत तोता बोला– इसमें क्या शक है?

तोते का यह जवाब सुनकर अमीर बहुत खुश हुआ। उसने तोतेवाले को पाँच सौ रुपये दिये और तोते को लेकर अपने घर चला गया। घर जाने पर उसको मालूम हुआ कि तोता सब बातों का एक ही जवाब देता है। तब उसको बहुत दुख हुआ। उसे अपनी बेवकूफ़ी पर गुस्सा आया और उसने कहा– इस तोते के लिए मैंने पाँच सौ रुपये दिये। मैं कितना बड़ा मूर्ख हूँ? झट तोते ने कहा– इसमें क्या शक है?

तोते की बात सुनकर उसको बड़ी हँसी आयी। उसने तोते को छोड़ दिया।

सीख: अक़्ल ठिकाने लगाना अच्छा है।

Book 1.indb 20 21-06-2018 17:12:42

व्याकरण

7 वर्ण

भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से बनता है और शब्द वर्णों से बनता है। वर्ण लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इसे अक्षर भी कहा जाता है।

कथित भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि का लिखित रूप ही वर्ण है। इसके खंड नहीं किये जा सकते।

वर्णों के समूह को हम वर्णमाला कहते हैं।

वर्ण का शाब्दिक अर्थ है - रंग। हम अपनी बात को लिखने के लिए किसी न किसी रंग की स्याही का प्रयोग ज़रूर करते हैं। इस प्रकार लिखी हुई बात का कोई न कोई वर्ण या रंग अवश्य होता है। इसलिए लिखित अक्षर का वर्ण नाम पड़ा।

हिंदी वर्णों के दो प्रकार हैं- 1. स्वर, 2. व्यंजन

अनुस्वार और विसर्ग को स्वर के साथ रखा जाता है।

स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अनुस्वर — अं

विसर्ग — अः

Book 1.indb 21 21-06-2018 17:12:42

व्यंजन				
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

हिंदी में कुछ संयुक्त व्यंजन भी व्यवहृत हैं। जैसे श्र (श् अ र), क्ष (क् अ ष), ज्ञ (ज् अ ञ), त्र (त् अ र)। व्यंजनों के साथ जब स्वर मिलते हैं, तब बारह खड़ियों का उपयोग कर लिखा जाता है।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. वर्णमाला किसे कहते हैं? हिंदी वर्णों के कितने प्रकार हैं?

Book 1.indb 22 21-06-2018 17:12:42

व्याकरण

8 शब्द

हम कभी-कभी अपने मन के विचारों को व्यक्त करने के लिए एकाध शब्द पर्याप्त समझते हैं। उन एकाध शब्दों में हमारा काम पूर्ण रूप से पूरा भी हो जाता है। इससे हम भाषा में शब्द का महत्वपूर्ण स्थान समझ सकते हैं। शब्द भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है।

सार्थक ध्वनि–समूह को हम शब्द कहते हैं।

व्युत्पत्ति, रचना या बनावट, प्रयोग – इन तीन दृष्टियों से शब्द का वर्गीकरण किया जाता है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द के चार भेद माने जाते हैं। जैसे– 1. तत्सम शब्द, 2. तत्भव शब्द, 3. देशज शब्द, 4. विदेशी शब्द।

1. **तत्सम शब्द** – **ये संस्कृत के वे शब्द हैं जो उसी रूप में ज्यों के त्यों हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- अग्नि, अश्रु, गृह, रात्रि, भ्राता....।**

2. **तत्भव शब्द** – **ये संस्कृत के वे शब्द हैं जो थोड़े-से परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- आग, आँसू, घर, रात, भाई....।**

3. **देशज शब्द** – **ये वे शब्द हैं जो अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी में लिये गये हैं और हिंदी के ही अपने हैं। जैसे- थैला, गाड़ी, खिड़की, घोंसला, पगड़ी, पेट, जूता, झाड़ू, लोटा, चिड़िया, कपड़ा....।**

4. **विदेशी शब्द** – **ये वे शब्द हैं जो किसी विदेशी भाषा से हिंदी में लिये गये हैं और हिंदी में उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- पेंसिल, कुली, चाभी, फ़ीस, फ़ुट बाल, ज़मीन, चाय, प्याला, अमीर, बटन, तोप, बेगम....।**

रचना या बनावट की दृष्टि से शब्द के तीन भेद किये जाते हैं– 1. रूढ़ शब्द, 2. यौगिक शब्द, 3. योगरूढ़ शब्द।

1. **रूढ़ शब्द –** जिन शब्दों के खंड किये नहीं जाते और खंड करने पर उसका कुछ

Book 1.indb 23 21-06-2018 17:12:42

अर्थ नहीं निकलता, वे रूढ़ शब्द हैं। ये शब्द परंपरा से चले आ रहे हैं। जैसे- हाथ, रात, कुरसी, कलम, किताब, ज़मीन, आग, पानी....।

2. यौगिक शब्द - दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के मेल से बने शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं। खंडों (रूढ़ शब्द) का यौगिक अर्थ ही इसका अर्थ होता है। जैसे– पाठशाला, देवालय, रसोईघर, विद्याध्ययन, फूलमाला, कलाभ्यास....।

3. योगरूढ़ शब्द - योगरूढ़ शब्द भी दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों के मेल से ही बनता है। लेकिन अर्थ खंड-शब्दों का यौगिक अर्थ न होकर बिलकुल दूसरा होता है। योगरूढ़ शब्द का अर्थ रूढ़ी होता है। जैसे पंकज (कमल), नीलकंठ (शिव), वीणावाणि (सरस्वती), चक्रपानि (विष्णु)....।

प्रयोग की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं– 1. विकारी शब्द, 2. अविकारी शब्द।

1. विकारी शब्द - लिंग, वचन, कारक आदि के कारण जिन शब्दों के रूप में बदलाव होता है, वे विकारी शब्द हैं। जैसे– लड़का-लड़की (लिंग), लड़का-लड़के (वचन), लड़के-लड़कों को (कारक)।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

2. अविकारी शब्द - लिंग, वचन, कारक आदि के कारण जिन शब्दों के रूप में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता, वे अविकारी शब्द हैं। जैसे– जल्दी (लड़का जल्दी गया, लड़की जल्दी गयी, लड़के जल्दी गये, लड़कियाँ जल्दी गयीं।

क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादी बोधक अविकारी शब्द हैं।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. शब्द किसे कहते हैं? किन-किन दृष्टियों से शब्दों का वर्गीकरण किया जाता है?

Book 1.indb 24 21-06-2018 17:12:42

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द के कितने भेद हैं? सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

2. रचना की दृष्टि से शब्द के भेदों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

3. प्रयोग की दृष्टि से शब्द के भेद क्या-क्या हैं? सविस्तार उत्तर लिखि

Book 1.indb 25 21-06-2018 17:12:42

व्याकरण

9 भाषा

भाषा की परिभाषाः भाषा वह माध्यम है जिसके द्‌वारा लोग अपने भावों, विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरी की बात समझते हैं।

मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। वह चाहता है कि वह अपने मन के विचारों को दूसरों के सामने पूर्ण रूप से प्रकट करे और दूसरों के विचारों को पूर्ण रूप से समझे। इसके लिए उसे आंगिक संकेत पर्याप्त नहीं थे। इस स्थिति में वह अपने मुँह से निकलनेवाली आवाज़ को कुछ निश्चित रूप देने लगा और अपने विचारों को, इच्छाओं को, आदेशों को शब्दबद्ध कर प्रकट करने लगा।

मनुष्य अपने मन के विचार को मुँह से बोलकर दूसरे मनुष्य तक पहुँचाता है। इस बोली को हम भाषा कहते हैं। जैसे भाषण -देना, गीत गाना, समाचार सुनाना आदि इसका आधार ध्वनि या आवाज़ है।

भाषा के दो प्रकार हैं- 1. मौखिक भाषा, 2. लिखित भाषा।

जो भाषा मुँह से बोली जाती है और कानों से सुनी जाती है, उसे हम कथित भाषा या मौखिक भाषा कहते हैं। जो भाषा हाथ या किसी यंत्र से लिखी या टंकित की जाती है और आँखों से पढ़ी जाती है, उसे हम लिखित भाषा कहते हैं। उदाहरणः- पुस्तकें समाचार पत्र आदि। भाषा के भेद 1. मातृभाषा 2. राजभाषा 3. राष्ट्रभाषा 4. मानक भाषा। मानव-जीवन में लिखित भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. भाषा किसे कहते हैं?

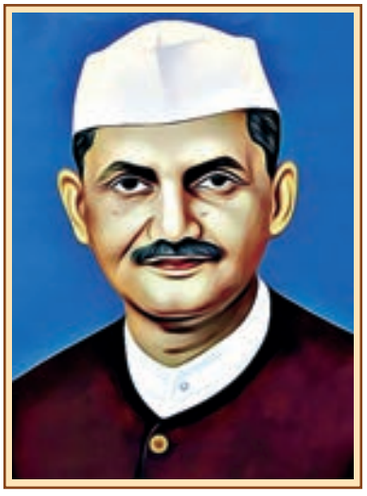
II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. भाषा की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

Book 1.indb 26 21-06-2018 17:12:43

निबंध 10

लालबहादुर शास्त्री



भारत माता के सुपुत्र लाल बहादुर शास्त्री हमारे देश के दूसरे प्रधानमंत्री थे। उनका जन्म 2, अक्तूबर 1904 को मोगलसराई नामक गाँव (जिला वारणासी, उत्तरप्रदेश) में हुआ था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद और माता का नाम रामदुलारी देवी था। लालबहादुर शास्त्री का पूरा नाम लालबहादुर शारद प्रसाद श्री वास्तव था। आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने भाग लिया। अंग्रेज़ों ने उनको जेल में डाल दिया। उन्होंने 9 साल जेल में बिताये।

लालबहादुर शास्त्री देश के सच्चे सपूत थे। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देशभक्ति के लिए समर्पित कर दिया। एक साधारण परिवार में जन्मे शास्त्रीजी का जीवन गाँधीजी के असहयोग आंदोलन से शुरू हुआ और स्वतंत्र भारत के द्वितीय प्रधान मंत्री के रूप में समाप्त हुआ। देश के लिए उनके समर्पण भाव को राष्ट्र कभी भूला नहीं सकेगा।

नेहरूजी की मृत्यु के बाद शास्त्री जी भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री बने। सन् 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया। तब इनकी आज्ञा से भारत के सिपाहियों ने पाकिस्तानी सेना को हराया। ताशकंद में भारत और पाकिस्तान के नेताओं के बीच समझौते की वार्ता हो रही थी। उस समय अचानक हृदय-गति रुक जाने से उनका निधन हो गया।

उनके बताए हुए आदर्शों पर चलकर ही भ्रष्टाचार रहित देश की हमारी कल्पना को साकार रूप दिया जा सकता है। 'सादाजीवन, उच्च विचार' की धारणा से परिपूरित उनका जीवन चरित्र सभी के लिए अनुकरणीय है।

लाल बहादूर शास्त्री जी में सादगी, ईमानदारी, देश भक्ति, दृढता आदि गुण विद्यमान थे। वे शांति के पूजारी थे। वे जितने नम्र थे, उतने ही कठोर थे। सिर्फ़ डेढ़ साल तक प्रधानमंत्री के पद पर रहकर उन्होंने बड़ा चमत्कार कर दिखाया। इसलिए हम उनको हमेशा याद करते रहेंगे।

Book 1.indb 27 21-06-2018 17:12:43

निबंध 11

व्यायाम का महत्व

रूपरेखाएँ:

1. प्रस्तावना
2. व्यायाम अर्थ
3. आज की स्थिति
4. रोग का कारण
5. व्यायाम का लाभ
6. उपसंहार

प्रस्तावना: 'शरीर' - भगवान की देन है। यह भगवान का मंदिर है। इसे दूषित करने का हमारा कोई हक नहीं है। अंग्रेज़ी में कहावत है - "ञदृद्वदड्ड श्र्त्दड्ड त्द ड्ड ञदृद्वदड्ड डदृड्ड्र" - महाकवि कालिदास का कथन है "शरीर" आद्यम्खलु धर्म - साधनम - अर्थात् धर्म साधना के लिए प्रथम साधन शरीर ही तो है। यानी स्वस्थ शरीर ही लेकर ही हम धर्म - कर्म कर सकते हैं। कसरत शारीरिक परिश्रम का ही दूसरा नाम है। आज उसको व्यायाम अथवा शरीरिक मेहनत भी कहते हैं।

व्यायाम का अर्थ: प्राचीन काल से मानव परिश्रमशील ही रहा। धार्मिक लोग पैदल यात्रा करके ही धर्म का चार करते थे। शारीरिक मेहनत को ही कसरत कहते हैं। राजवंश के लोगों को धनुर्विद्या, तलवार चलाना, घोड़े पर या हाथी पर सवार करना आवश्यक था। जिससे उनको शरीरिक परिश्रम करना पड़ता था। व्यापारी लोगों को दूर देशों से समाज के लिए आवश्यक चीज़ों को लाने में शारीरिक श्रम करना पड़ता था। अन्य किसान, बुनकर, बढ़ई जैसे लोगों का जीवन भी शारीरिक श्रम से भरा हुआ था। सूर्य नमस्कार करनेवाले, त्रिकाल-संध्या पूजा करन्-ोवाले, प्राणायाम और कई तरह के आसन का अभ्यास करते समय शरीर से काम करते थे।

Book 1.indb 28 21-06-2018 17:12:43

गुरुकुल में रहनेवाले विद्यार्थीयों को गुरु की सेवा में शरीर-श्रम करना पड़ता था। आधुनिक काल की शिक्षा-प्रणाली में जो परिवर्तन हुए उनके अनुसार छात्रों को पुस्तकों के अध्ययन के साथ कम से कम एक बार शारीरिक व्यायाम के वर्ग में हाज़िरी देना अनिवार्य बनाया गया है। इसके साथ 'क्रिकेट', 'हाकी', 'फुटबाल', 'वालिबाल', 'टेनिस', 'बैस्केट-बाल' जैसे खेलो-कुद में शामिल होने के लिए अवसर दिया जाता है। कुछ लड़के-लड़कियाँ एन.सी.सी, एन.एस.एस. आदि में भर्ती होने के लिए उत्साह दिखते हैं। ऐसे छात्र-छात्राओं को प्रतिदिन कसरत करना अनिवार्य बना दिया जाता है। इससे उन विद्यार्थियों का शरीर अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा स्वस्थ रहता है। कुछ छात्रों को अनेक प्रकार के आसन, दण्ड-बैठक खेल के मैदान में दौड़ना, कुश्ती लड़ना, तालाब में तैरना आदि का अभ्यास करने का अवसर दिया जाता है। वर्षांत में इन छात्र-छात्राओं में प्रतियोगिताएँ चलाकार उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।



आज की स्थितिः आज कल लोगों का जीवन बहुत आरामदायक हो गया है, बहुत सारे कामों के लिए लोगों को ज़्यादा शारीरिक काम नहीं करना पड़ता है। जिसके कारण लोग धीरे-धीरे आलसी होते जा रहे हैं और शरीर काम करते ही थक जाता है। टी.वी. मोबईल, इन्टरनेट आदि बच्चों से खेलकूद को चुरा लाया है। उनकी तंदुरुस्ती का बिगड़ दिया है।

रोग का कारणः मानव शरीर एक मशीन की तरह है। जिस तरह एक मशीन को काम

Book 1.indb 29 21-06-2018 17:12:43

में न लाने पर ठप पड़ जाती है, उसी तरह यदि शरीर में रक्त का संचालन हो तो उसमें कई तरह के विकार आने लगते हैं।

व्यायाम शरीर के संचालन का एक अच्छा तरीका है। फेफ़ड़ों को शुद्ध वायु पर्याप्त मात्रा में न मिले तो, रोग का आह्वान हो जाता। व्यायाम से माँस पेशियों और अस्थियों को ताकत मिलती है। शरीर का दर्द मिट जाहै।

व्यायाम का लाभ : ऐसा माना जाता है कि नियमित व्यायाम करने से लोग जल्दी बूढ़े नहीं दिखते है और लोगों का शरीर तंदुरुस्त बना रहता है। अगर शरीर स्वस्थ हो तो मन भी शांत रहता है और दिमाग भी काफ़ी तेज़ हो जाता है। जब दिमाग तेज़ रहे और शरीर स्वस्थ रहे तो आदमी की कार्यक्षमता भी बढ़ती है और उसकी उन्नती को नया आगाम मिलता है। आजकल व्यायाम हर किसी के लिए ज़रूरी है।

उपसंहार : पुराने ग्रंथों में कहा गया है कि धन यदि चला जाय तो फिर लौट सकता है या उसके बिना भी मनुष्य जीवित रह सकता है किंतु स्वास्थ्य के बिना मनुष्य का जीवन नि-ारर्थक बन जाता है। क्योंकि रोगी को न तो कोई भोजन, और न कोई आमोद प्रमोद कर खुश रह सकता है। अतः स्वास्थय ही सबसे बड़ा धन है और इसकी रक्षा के लिए व्यायाम करना आवश्यक है।

Book 1.indb 30 21-06-2018 17:12:43

पत्र लेखन

12 छुट्टी पत्र

छुट्टी माँगते हुए अपने अध्यापक के नाम पर एक पत्र लिखिए।

चेन्नई,

16-09-2018

प्रेषक

एल. दिवाकर,

छठी कक्षा,

सरकारी हाई स्कूल,

चेन्नई – 1.

सेवा में

अध्यापक,

सरकारी हाई स्कूल,

चेन्नई – 1.

मान्यवर अध्यापक,

सादर प्रणाम। मुझे दो दिन से बुखार है। इसलिए मैं विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि दिनांक 14.09.2018 से 16.09.2018 तक तीन दिनों की छुट्टी देने की कृपा करें।

आपका विनम्र छात्र

एल. दिवाकर

Unit 12.indd 31 22/06/18 4:54 PM

अनुवाद अभ्यास

13 सामान्य वर्तमानकाल

SIMPLE PRESENT TENSE

अंग्रेज़ी में लिखिए:-

1. हम पढ़ते हैं। - We read
2. वह आता है। - He comes
3. वे लिखते हैं। - They write
4. मैं खाता हूँ। - I eat

हिंदी में लिखिए:-

1. We listen - हम सुनते हैं।
2. Teacher teaches - शिक्षक सिखाते हैं।
3. Child cries - बच्चा रोता है।
4. Mother cooks - माँ रसोई बनाती है।
5. Tailor stitches - दर्जी सीता है।

Book 1.indb 32 21-06-2018 17:12:43

TERM - 2

गद्य

14

मौन ही मंत्र है



शिवप्पा और गौरी दोनों पति-पत्नी थे। वे दोनों क्रोधी स्वभाव के थे। वे छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा करते थे। अक्सर पति अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाता था। इसके कारण उनका घर नरक-सा बन गया था। स्वादिष्ट भोजन भी उनके लिए ज़हर-सा बन गया था।

एक दिन उनके गाँव में एक साधु महात्मा आये। वे लोगों को चमत्कार की कहानियाँ सुनाते थे और उपदेश भी देते थे। सैकड़ों लोग उनके दर्शन के लिए दूर-दूर से आते थे। गौरी भी उस साधु के पास गयी। उसने साधु को अपने घर की हालत कह सुनायी और अपने पति को सुधारने का उपाय भी पूछा।

साधु ने गौरी के हाथ में चावल के दानों से भरी एक बोतल दी और कहा–"जब तुम्हारे पति गुस्से में आकर बातें करना शुरू कर देते हैं, तब तुम इन चावल के दानों को मुँह में डाल लेना। थोड़े ही दिनों में तुम्हारा घर स्वर्ग बन जाएगा।"

सदा की तरह शिवप्पा ने घर आते ही अपनी पत्नी को गालियाँ देना शुरू कर दीं। तुरन्त गौरी ने चावल के दानों को मुँह में डाल लिया। पति की गालियाँ सुनकर गौरी को गुस्सा आया, लेकिन मुँह में चावल के दाने होने के कारण वह चुप रही। जब पत्नी चुप रही, तो पति को आश्चर्य होने लगा। यह सिलसिला चार-पाँच दिनों तक चलता रहा।

धीरे-धीरे शिवप्पा का हृदय बदलने लगा। गौरी के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बदलने लगा। अब शिवप्पा को अपनी मूर्खता महसूस होने लगी। वह एक दिन गौरी के पास गया और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा माँगने लगा। उसने गौरी से कहा– "मैं राक्षस हूँ, तुम देवी हो। मैंने तुमको कई कष्ट दिये। कई अपशब्दों का प्रयोग भी किया। लेकिन तुमने बदले में कुछ नहीं कहा। मैं आगे तुमपर कभी अत्याचार नहीं करूँगा। तुम मुझे माफ़ कर दो।"

गौरी ने प्रेम से अपने पति की ओर देखा। पति की आँखों से आँसू बह रहे थे। गौरी को भी अपनी गलतियाँ महसूस हुईं और रोते हुए अपने पति से माफ़ी माँगने लगी। अब उनका घर स्वर्ग बन गया।

मौन धारण मनुष्य के हृदय में परिवर्तन लाता है। हृदय परिवर्तन नरक को स्वर्ग बनाता है। हाँ, मौन से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है।

Book 1.indb 34 21-06-2018 17:12:43

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखिए :-

(1) हाथ उठाना (2) मौन धारण करना (3) महसूस होना

(4) दृष्टिकोण (5) मूर्खता

2. विलोम शब्द लिखिए :-

(1) स्वर्ग (2) ज़हर (3) महात्मा

(4) प्रेम

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) परिवर्तन (2) दर्शन करना (3) हाथ उठाना

(4) दुर्व्यवहार

4. सही जवाब चुनकर फिर लिखिए:-

(1) शिवप्पा और गौरी दोनों ———— स्वभाव के थे।

(प्रेमी, क्रोधी, दानी, लोभी)

(2) साधु चावल के दानों से भरी एक ———— दी।

(बोरा, बोतल, डिबिया, गाँठ)

(3) जब गौरी चुप रही, तो शिवप्पा को ———— होने लगा।

(दुख, खुश, आश्चर्य, महसूस)

(4) ———— परिवर्तन नरक को स्वर्ग बनाता है।

(मन, घर, हृदय, बुद्धि)

5. सही या गलत - फिर लिखिए:-

(1) गौरी ने द्वेष से अपने पति की ओर देखा।

(2) गौरी और शिवप्पा छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा करते थे।

(3) लड़ाई झगड़े के कारण उनका घर नरक-सा बन गया।

(4) मौन-धारण जानवरों के हृदय में परिवर्तन लाता है।

Book 1.indb 35 21-06-2018 17:12:43

6. शुद्ध कीजिए:-

(1) गौरी ने प्रेम से अपना पति को ओर देखा।

(2) पति की आँखों से आँसू बह रही थी।

(3) गौरी-शिवप्पा का घर स्वर्ग बन गयी।

(4) स्वादिष्ट भोजन भी पति-पत्नी के लिए जहर-सी बन गयी थी।

7. इन प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए:-

(1) 'स्वादिष्ट भोजन' भी पति-पत्नी के लिए क्यों ज़हर-सा बन गया था।

(2) पत्नी ने साधु महात्मा से क्या प्रार्थना की?

(3) साधु ने गौरी से क्या कहा?

(4) शिवप्पा के हृदय परिवर्तन का कारण क्या था?

(5) 'हृदय परिवर्तन' - की क्या आवश्यकता है?

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) शिवप्पा और गौरी का घर नरक-सा क्यों बना?

(2) साधु ने गौरी को कौन-सा उपाय बताया?

(3) शिवप्पा और गौरी का घर कैसे स्वर्ग बना?

9. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

"गौरी ने प्रेम से अपने पति की ओर देखा। पति की आँखों से आँसू बह रहे थे। अब गौरी को भी अपनी गलतियाँ महसूस हुईं और रोते हुए अपने पति से माफ़ी माँगने लगी। अब उनका घर स्वर्ग बन गया।

मौन धारण मनुष्य के हृदय में परिवर्तन लाता है। हृदय परिवर्तन नरक को स्वर्ग बनाता है। हाँ, मौन से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है।"

(1) किसकी आँखों से आँसू बह रहे थे?

(2) नरक कब स्वर्ग बनता है?

(3) मौन से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है – क्यों?

Book 1.indb 36 21-06-2018 17:12:43

गद्य

15

कस्तूरबा गाँधी



कस्तूरबा गाँधी का जन्म 11 अप्रैल सन् 1869 में काठियावाड़ के पोरबंदर नगर में हुआ था। विवाह के पहले उनका नाम कस्तूर था। 'बा' का अर्थ गुजराती में 'माँ' है। सन् 1882 में कस्तूरबा का विवाह मोहनदास करमचंद गाँधी से हुआ। गाँधीजी को सभी लोग आत्मीयता एवं आदर से 'बापू' कहते थे। अतः कस्तूर को 'बा' कहने लगे।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में कस्तूरबा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनको औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला था।

आरंभ में कस्तूरबा गाँधीजी के साथ ही रहती थी पर सन् 1886 में गाँधीजी इंग्लैंड चले गये। पति की अनुपस्थिति में उन्होंने अपने बालक हरिलाल का पालन-पोषण किया। शिक्षा समाप्त करने के बाद गाँधीजी इंग्लैंड से लौट आयें पर शीघ्र ही उनको दक्षिण आफ्रिका जाना पड़ा। कस्तूरबा भी गाँधीजी के साथ वहाँ गयी। वहाँ पर भारतवासियों की दशा के विरोध में कारावास मिला। जेल में अन्न ठीक नही लगा। अतः उन्होंने फलाहार करने का निश्चय किया पर अधिकारियों ने उनकी प्रार्थना ठुकरा दी तो उन्होंने उपवास किया। आखिर जेल प्रशासन को झुकना पड़ा और उनको फल दिये जाने लगे।

सन् 1915 में कस्तूरबा गाँधीजी के साथ भारत लौट आयीं। चंपारन सत्याग्रह के दौरान वे भी गाँधीजी के साथ वहाँ गयीं। और लोगों को सफ़ाई, अनुशासन, पढ़ाई आदि के महत्व के बारे में बताया, इसी दौरान में खेडा सत्याग्रह के दौरान भी 'बा' घूम-घूमकर स्त्रियों को प्रोत्साहन दिया।

सन् 1922 में गाँधीजी की गिरफ़तारी के पश्चात् उन्होंने उस गिरफ़तारी के विरोध में विदेशी कपडों के परित्याग का आह्वान किया। उन्होंने गाँधीजी का संदेश प्रसारित करने के लिए गाँवों का दौरान भी किया। 1930 में दाँडी और धरासना के बाद 'बापू' जेल गये। तब 'बा' ने उनका स्थान लिया और लोगों का मनोबल बढ़ाया।

क्रांतिकारी गतिविधि के कारण 1932 में उनका अधिकांश समय जेल में बीता। सन् 1939

Unit 15.indd 37 22/06/18 4:57 PM

में उन्होंने राजकोट रियासत के राजा के विरोध में भी सत्याग्रह में भाग लिया। वहाँ के शासक ठाकुर साहब ने प्रजा को कुछ अधिकार देना स्वीकार किया था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अंग्रेज़ी सरकार ने बापू सहित कांग्रेस के सभी शीर्ष नेताओं को 9 अगस्त 1942 को गिरफ़तार कर ली गया। उसके पश्चात् 'बा' ने मुंबई के शिवाजी पार्क में भाषण देने का निश्चय किया। किंतु वहाँ पहँचने पर उनको गिरफ़तार कर ली । 22 फ़रवरी 1944 को उन्हें एक बार भयंकर दिल का दौरान पड़ा और 'बा' हमेशा के लिए यह दुनिया छोड़कर चली गयी।

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखिए :-

(1) गिरफ़तार (2) सत्याग्रह (3) औपचारिक

(4) दृष्टिकोण

2. विलोम शब्द लिखिए :-

(1) स्वीकार (2) अनुपस्थिति (3) अस्वस्थ

(4) अखाद्य

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) शामिल होना (2) साथ देना (3) ठुकरा देना

(4) प्रबंध करना

4. सही जवाब चुनकर फिर लिखिए:-

(1) कस्तूरबा का जन्म ———— नगर में हुआ।

(राजकोट, पोरबंदर, मोधिनी पूर जुगानावाड़)

(2) सन् ———— में गाँधीजी इंग्लैड़ गये।

(1888, 1878, 1887, 1978)

(3) कस्तूरबा ने लोगों का ———— बढ़ावा।

(भुजबल, आत्मबल, मनोबल, धन-बल)

Unit 15.indd 38 22/06/18 4:57 PM

5. सही या गलत - बताइए:-

(1) कस्तूरबा अपने पति के सभी कार्यों में साथ नहीं दे सकती थीं।

(2) जेल में मिला भोजन अखाद्य था। अतः कस्तूरबा ने फलाहार करने का निश्चय किया।

(3) कस्तूरबा ने विदेशी कपड़ों को परित्याग का आह्वान किया।

(4) सन् 1932 में कस्तूरबा का अधिकांश समय घर में ही बीत गया।

(5) कस्तूरबा के निवेदन पर सरकार ने आयुर्वेधी के डाक्टर का प्रबंध भी कर दिया।

6. इन प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए:-

(1) गाँधीजी को सभी लोग कैसे पुकारते थे?

(2) भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में कस्तूरबा का हिस्सा क्या था?

(3) जेल में कस्तूरबा को क्यों उपवास करना पड़ा?

(4) सन् 1922 में गाँधीजी की गिरफ़तारी के पश्चात् कस्तूरबा ने किस तरह देश की सेवा की?

(5) कस्तूरबा का निधन कब और कैसे हुआ?

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) कस्तूरबा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(2) कस्तूरबा ने किस तरह गाँधीजी का साथ दिया?

(3) सन् 1922 में गाँधीजी की गिरफ़तारी के पश्चात् कस्तूरबा ने क्या प्रशंसनीय कार्य किया?

(4) स्वतंत्रता के आंदोलन में कस्तूरबा का योगदान क्या रहा?

(5) कस्तूरबा की सेवाओं का विवरण दीजिए।

Unit 15.indd 39 22/06/18 4:57 PM

8. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

जब से मनुष्य को एवरेस्ट चोटी का पता चला, वह उसपर चढ़ने के प्रयत्न बराबर करता रहा। भिन्न-भिन्न जाति तथा देशों के लोग आये और निराश होकर लौटते रहे। कईयों ने इस प्रयत्न में अपनी ज्ञान की बलि दी, लेकिन मनुष्य-जाति की हिम्मत कभी टूटी नहीं।

पहली बार सन् 1921 ई. में जाँच-पड़ताल के ख्याल से इस शिखर पर चढ़ने का प्रयत्न किया गया। फिर दूसरी बार सन् 1922 ई में विशेष प्रयत्न किया गया।

एवरेस्ट की चढ़ाई के कार्य में लगनेवालों में मैलेरी और अर्विन के नाम बहुत मशहूर हैं, तो सन् 1925 ई में 28,230 फुट की ऊँचाई तक पहुँचे थे मगर अपनी कहानी सुनाने के लिए वापस नहीं आ सके। वहीं इस पुण्य कार्य में बलि हो गये। अंत में सन् 1953 ई. में एक ब्रिटिश पर्वतारोही दल ने कर्नल हंट के नेतृत्व में अपनी कोशिश में विजय पायी। इस दल के सदस्यों में से दो मेंबरों के नाम एवरेस्ट विजय के इतिहास में अमर रहेंगे और वे हैं तेनजिंग और हिलेरी।

(1) मैलेरी और अर्विन के नाम कैसे अविस्मरणीय हो गये?

(2) कर्नल हंट की सेवाओं के बारे में लिखिए।

(3) पहले पहल एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने का कब प्रयत्न किया गया?

(4) मैलेरी और अर्विन कब एवरेस्ट की चढ़ाई के कार्य में सफल हुए?

(5) इस गद्यांश का एक उचित शीर्षक दीजिए।

Unit 15.indd 40 22/06/18 4:57 PM

पद्य

16

एक बूँद

श्री - अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"



कवि परिचय: श्री - अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" जी का जन्म उत्तर प्रदेश के निजामाबाद में हुआ। वे खड़ीबोली हिन्दी के सर्व-प्रथम कवि माने जाते हैं। 'प्रिय प्रवास', 'वैदेही वनवास' आदि उनके काव्य आधुनिक हिन्दी के प्रथम महाकाव्य हैं। वे भावुक कवि ही नहीं, बल्कि उपदेशक आचार्य भी थे।

कविता के बारे में : 'एक बूँद' नामक इस कविता में कवि एक बूँद के माध्यम से हमें यह उपदेश देता है कि हमें उन्नति के रास्ते पर आगे बढना चाहिए। घर छोडकर बाहर निकलने से डरना नहीं चाहिए। बिना हिचकिचाये हिम्मत के साथ कर्तव्य-मार्ग पर निकल पडने पर ही हम जीवन में उन्नति प्राप्त कर सकते हैं।)

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,

थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढी।

सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,

आह! क्यों घर छोडकर मैं यों क़ढी।

दैव, मेरे भाग में क्या है बदा,

मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।

या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी,

चू पडूँगी या कमल के फूल में।

बह गयी उस काल एक ऐसी हवा,

वह समुन्दर-ओर आयी अनमनी।

Book 1.indb 41 21-06-2018 17:12:44

एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला,

वह उसी में जा पडी, मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते,

जब कि उनको छोडना पडता है घर।

किन्तु घर का छोडना अक्सर उन्हें,

बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

कठिन शब्दार्थ

जी में – मन में; क़ढी – निकली; दैव – ईश्वर; बदा है – लिखा है; धूल में मिलना – नष्ट होना; अंगारा – चिनगारी, आग; चू पड़ना – टपक पड़ना; अनमनी – अप्रसन्न होकर; समुन्दर – समुद्र; झिझकना – हिचकिचाना, संकोच करना।

कविता का सारांश

यह कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की उपदेशात्मक कविता है। कविता में आशावाद की गहरी छाप है।

बादलों की गोद से अभी एक बूँद निकली। वह थोड़ी दूर आगे बढ़ी। अब वह सोचने लगी – "हाय, मैं अपने घर से क्यों निकली? भगवान ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है? मेरा हाल क्या होगा? मैं बचूँगी या मिट्टी में मिलकर मिट जाऊँगी? किसी अंगारे पर पड़कर जल जाऊँगी या किसी कमल में पड़कर बह जाऊँगी?"

उस समय अचानक ऐसी हवा चली जिससे वह बूँद समुद्र की ओर आयी। वहाँ एक सीप का मुँह खुला हुआ था। वह बूँद उसमें जाकर गिर पड़ी और सुंदर मोती बन गयी।

आदमी भी अपना घर छोड़ते समय बूँद की तरह सोचता है और हिचकता है। लेकिन घर छोड़ने से वह उस बूँद की तरह मूल्यवान बन जाता है।

Book 1.indb 42 21-06-2018 17:12:44

2. कवि और कविता का नाम बताते हुए पद्यांश का भावार्थ हिंदी में लिखिए :-

लोग यों ही हैं - - - - - - - - -

- - - और ही बना देता है कर।

यह पद्यांश 'एक बूँद' नामक कविता से लिया गया है। कवि का नाम अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' है।

लोग घर छोड़कर किसी काम पर निकलते समय ऐसे हिचकते हैं, डरते हैं कि उनका भविष्य क्या हो? लेकिन उनका घर छोड़कर निकलना अक्सर उनको बड़ा बना देता है, उनके भविष्य को उज्ज्वल बना ही देता है।

Book 1.indb 43 21-06-2018 17:12:44

पद्य

17

नीम का पेड़



मेरे घर के पास लगा है
पेड़ नीम का हरा-भरा,
उसकी डालें झुक झुक छूतीं
मेरे रहने का कमरा।

अभी-अभी निकली फुनगी में
नयी-नयी प्यारी कोंपल,
लाल, बैंगनी रंग देखकर
मेरा मन बनता शीतल!

रोज़ सबेरे चिड़ियाँ आकर
इसमें शोर मचाती हैं,
तरह-तरह के गाने गाकर
मेरा दिल बहलाती हैं।

वैसे भी मैं रोज़ बैठता
इसकी छाया के नीचे,
खेला करता आँख-मिचौनी
कभी-कभी आँखें मींचे।

नीम न होती अगर सामने

Book 1.indb 44 21-06-2018 17:12:45

तो घर उजड़ा दिखलाता,

हरियाली के बिना हमारा

दिल न यों हरा रह पाता!

कैसे धन्यवाद दूँ उसको

जिसने है यह नीम दिया,

मुझको अपना पुत्र मानकर

मेरा उपकार असीम किया!

कठिन शब्दार्थ

डाल	– शाखा	महक	– खुशबू	कोंपल	– किसलय
असीम	– बेहद	मस्त	– बेफ़िक्र		
फुनगी	– पौधों की शाखाओं का ऊपरी भाग				

कविता का सारांश

मेरे घर के सामने एक नीम का पेड़ है। वह हरा-भरा है। उसकी डालें मेरे कमरे का झुक-झुककर छूती हैं। उनका भिन्न-भिन्न रंग देखकर मेरा मन खुश होता है।

रोज़ सबेरे चिड़ियाँ इस पेड़ पर बैठकर शोर मचाती हैं। कई तरह के गीत गाकर मेरा दिल बहलाती हैं। मैं रोज़ इसके नीचे बैठता हूँ और आँख-मिचौनी खेलता हूँ।

मेरे घर के सामने अगर यह पेड़ नहीं होता तो मेरा घर उज़डा होता। हरियाली के बिना मेरा दिल भी सूख जाता।

जिसने मुझे अपना पुत्र मानकर यह नीम का पेड़ दिया, मुझ पर उपकार किया, उसे मैं धन्यवाद कैसे दूँ।

कवि बड़े प्रकृति-प्रेमी हैं। उन्होंने एक नीम के पेड़ का वर्णन करते हुए इस कविता में अपने प्रकृति-प्रेम को सुन्दर ढंग से प्रकट किया है।

Book 1.indb 45 21-06-2018 17:12:45

पद्य का भावार्थ हिंदी में लिखिए:-

1. रोज़ सबेरे ..... दिल बहलाती हैं।

यह पद्यांश 'नीम का पेड़' नामक कविता से लिया गया है।

मेरे घर के सामने जो नीम का पेड़ है, उसमें रोज़ सबेरे चिड़ियाँ बैठकर खुशी से शोर मचाती हैं। वे तरह-तरह के गाने गाकर मेरा दिल बहलाती है।

2. कैसे धन्यवाद ..... असीम किया।

यह पद्यांश 'नीम का पेड़' नामक कविता से लिया गया है।

जिसने मुझे अपना पुत्र मानकर बड़े प्रेम से यह नीम का पेड़ दिया, उसने मेरा बड़ा उपकार किया है। उस उपकारी को मैं धन्यवाद कैसे दूँ?

Book 1.indb 46 21-06-2018 17:12:45

संक्षिप्त अध्ययन

18 कपड़ों का आदर

विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर बंगाल के नामी आदमी थे। अमीर–गरीब, राजा–रईस सब उनका आदर करते थे। उनकी सलाह के बिना कोई बड़ा काम न होता था। वे बहुत बड़े विद्वान भी थे। इसलिए लोग उनको 'विद्यासागर' यानी 'विद्या का समुद्र' कहते थे। वे हमेशा मोटी धोती–कुर्ता पहनते थे। वे देखने में बहुत सीधे–सादे जान पड़ते थे।

एक बार बंगाल के एक धनी आदमी ने उनको दावत पर बुलाया। उस दावत में बहुत–से रईस लोग बुलाये गये थे। बड़ी ठाट–बाट से तैयारी की गयी। अच्छी–अच्छी सवारियों में बैठकर मेहमान लोग दावत में भाग लेने आये। विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर रोज़ की तरह मोटी धोती और मोटा कुर्ता पहनकर अमीर के घर पहुँचे। दरबान ने विद्यासागर को साधारण कपड़ों में देखकर समझा कि कोई गरीब आदमी बिना बुलाये खाने के लिए चला आया है। इसलिए उसने उनको अन्दर जाने नहीं दिया। वे चुपचाप घर लौट गये।

सभी मेहमान आ चुके थे, लेकिन विद्यासागर का कहीं पता नहीं था। उनके न आने से दावत रुक गयी। मेजबान फ़ौरन गाड़ी भेजकर विद्यासागर को लिवा लाया। इस बार विद्यासागर अच्छे कपड़े पहनकर आये। लोग विद्यासागर को अच्छे कपड़ों में देखकर ताज्जुब करने लगे।

भोजन परोसा गया और सब लोग खाने लगे, लेकिन विद्यासागर बार–बार अपने कपड़ों से कह रहे थे– "तुम खाओ, अजी, खाते क्यों नहीं?" यह देखकर लोगों को और भी आश्चर्य हुआ। मेजबान ने विद्यासागर के पास जाकर पूछा– "विद्वानजी, आप क्या कर रहे हैं? इसका क्या मतलब है?"

विद्यासागर ने जवाब दिया– "मैं जब सादे कपड़े पहनकर आया था तब अंदर आ नहीं पाया। अब अच्छे कपड़ों की ही वजह से अन्दर आ पाया हूँ। यह दावत तो कपड़ों के लिए है। इसलिए मैं उन्हीं से खाने को कह रहा हूँ।"

विद्यासागर की बात सुनकर अमीर आदमी को बड़ी शरम आयी और उसने दरबान की बेवकूफ़ी के लिए विद्वानजी से माफ़ी माँगी।

सीख :– मूर्ख लोग बाह्याडंबर का आदर करते हैं।

Book 1.indb 47 21-06-2018 17:12:45

संक्षिप्त अध्ययन 19

दूध में पानी

एक ग्वाला दूध का व्यापार करता था। उसके पास बहुत–सी गायें और भैंसें थीं। ग्वाला आधा दूध और आधा पानी मिलाकर बेचता था। वह हर महीने हज़ारों रुपये कमाता था।

एक दिन वह ग्वाला बहुत–सा रुपया लेकर गाय खरीदने बाज़ार जा रहा था। वहाँ अच्छी–अच्छी गायें बिकती थीं।

चलते–चलते जब दोपहर हुआ तो ग्वाले को भूख लगी। सड़क के पास ही एक बड़ा तालाब था, जिसके किनारे कई बड़े–बड़े पेड़ थे। ग्वाले ने सोचा– "चलो, तालाब में नहाकर थोड़ी देर आराम कर लें, फिर बाज़ार जाएँगे।" यह सोचकर वह तालाब के किनारे गया। उसने रुपयों की थैली कमर से खोलकर किनारे पर रखी। फिर तालाब में नहाने उतरा।

किनारे के एक पेड़ पर एक बड़ा बंदर बैठा हुआ था। उस बंदर ने रुपयों की थैली को खाने की पोटली समझा। वह धीरे–धीरे नीचे उतरा और थैली लेकर पेड़ पर चढ़ गया।

थैली को उठाकर ले जा रहे बंदर को देखकर ग्वाला बहुत घबराया। वह बंदर को डराने, धमकाने और उसपर पत्थर फेंकने लगा। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। ग्वाला लाचार होकर उसी पेड़ के नीचे बैठ गया। थोड़ी देर में बंदर ने रुपयों की थैली खोली, उसमें से एक रुपया निकालकर उसे बड़े गौर से देखने लगा और उसे पानी में डाल दिया। इसके बाद दूसरा रुपया निकाला। उसे भी उलट–पलटकर देखा और उसे ज़मीन पर फेंक दिया।

बंदर ने अब तीसरा रुपया निकाला। उसको भी उलट–पलटकर देखा। फिर उसे पानी में डाल दिया। इस तरह बंदर एक–एक रुपया निकालकर कभी पानी में और कभी ज़मीन पर फेंकता रहा। धीरे–धीरे थैली के सब रुपये खतम हो गये। बंदर ऊबकर दूसरे पेड़ पर चला गया।

ज़मीन पर पड़े रुपयों को ग्वाले ने ले लिया। उसने उन रुपयों को गिनकर देखा। उसको मालूम हुआ कि घर से लाये रुपयों में आधा भाग मात्र उसे मिला है। वह मन ही मन सोचने लगा– "पानी का पैसा पानी में गया, दूध का पैसा मुझे मिला। बंदर ने ठीक ही इन्साफ किया है।"

सीख :– पाप की कमाई कभी नहीं पचती

Book 1.indb 48 21-06-2018 17:12:45

20 लिंग

हमने पढ़ा है कि संज्ञा एक विकारी शब्द है, क्योंकि लिंग, वचन, और कारक के कारण उसमें विकार होता है, अर्थात् उसके रूप में परिवर्तन होता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम लिंग और वचन के विषय में और उनके नियमों के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लें।

लिंग

शब्द के जिस रूप से हमें इसका ज्ञान हो कि वह शब्द स्त्री जाति के लिए प्रयुक्त है या पुरुष जाति के लिए, उसे लिंग कहते हैं। हिंदी-व्याकरण के अनुसार लिंग के दो भेद माने जाते हैं– 1. पुल्लिंग, 2. स्त्रीलिंग।

हिंदी में केवल दो लिंगों की व्यवस्था होने के कारण घर, पुस्तक, हवा, नदी, जान, देश- जैसे अप्राणीवाचक शब्दों को भी इन दोनों ही लिंगों में, या तो पुल्लिंग में या स्त्रीलिंग में माना गया है। हिंदी सीखनेवाले दूसरे भाषा-भाषियों को यह एक हद तक कष्टदायक अवश्य है, फिर भी अभ्यास से यह आसान हो जाता है।

हिंदी सीखनेवालों को जब एक नया शब्द मिलता है, तब वे पहले उसका अर्थ जानना चाहते हैं। उसके साथ-साथ वे उस संज्ञा का लिंग भी जान लें, तो वे शुद्ध भाषा प्राप्त कर सकेंगे। क्रिया, विशेषण, संबंध कारक के विभक्ति चिह्न (का, के, की) आदि इस कार्य में सहायक सिद्ध होंगे।

पानी बहता है **('पानी' पुल्लिंग - 'क्रिया' से पता चलता है।)**

हवा बहती है **('हवा' स्त्रीलिंग - 'क्रिया' से पता चलता है।)**

ऊँची दीवार **('दीवार' स्त्रीलिंग - 'विशेषण' से पता चलता है।)**

चौड़ा मैदान **('मैदान' पुल्लिंग - 'विशेषण' से पता चलता है।)**

राम की आँख **('आँख' स्त्रलिंग - संबंध कारक 'की' से पता चलता है।)**

वचन और कारक संबंधी नियमों को जान लेना भी लिंग की पहचान में मदद देगा।

Unit 20.indd 49 22/06/18 4:59 PM

1. **पुल्लिंग -** पुरुष जाति का बोध करानेवाला शब्द-रूप पुल्लिंग है। जैसे– लड़का, घोड़ा, पहाड़, हाथ, धर्म....

निम्नोक्त समूह के शब्द अक्सर पुल्लिंग में ही रहते हैं-

दिनों के नाम – सोमवार, मंगलवार, बुधवार....

महीनों के नाम – जनवरी, फ़रवरी, मार्च....

फलों के नाम – आम, केला, अमरूद....

समयसूचक शब्द – क्षण, पल, घंटा, दिन, सप्ताह, महीना, साल....

ग्रहों के नाम – चंद्र, मंगल, सूर्य....

अनाजों के नाम – चावल, गेहूँ, चना, बाजरा....

धातुओं के नाम – सोना, लोहा, ताँबा....

वृक्षों के नाम – आम, नारियल, नीम, पीपल....

जिन शब्दों के अंत में आव, आपा, आर, पन, त्व, ख़ाना आदि प्रत्यय लगे रहते हैं, वे पुल्लिंग माने जाते हैं। जैसे– चुनाव, बुढ़ापा, लोहार, अपनापन, नारीत्व, डाकख़ाना....।

2. **स्त्रीलिंग -** स्त्री जाति का बोध करानेवाला शब्द-रूप स्त्रीलिंग है। जैसे– लड़की, बिल्ली, कलम, नदी, आँख, अहिंसा....

निम्नोक्त समूह के शब्द अक्रसर स्त्रीलिंग में ही रहते हैं-

1. नदियों के नाम – गंगा, कावेरी, तुंगभद्रा, नर्मदा...

2. लिपियों के नाम – देवनागरी, गुरुमुखी, अरबी...

3. भाषाओं के नाम – हिंदी, अंग्रेज़ी, तमिल, तेलुगु...

4. आकारांत तत्सम शब्द – वीणा, सेवा, सेना, यात्रा, कला...

जिन शब्दों के अंत में ता, आई, आवट, इया, आहट आदि प्रत्यय लगे रहते हैं, वे स्त्रीलिंग

Unit 20.indd 50 22/06/18 4:59 PM

शब्द माने जाते हैं। जैसे– मानवता, ऊँचाई, बनावट, चिड़िया, घबराहट....

विशेषता यह है कि हिंदी में अन्य पुरुष के सर्वनामों के अलावा उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के लिए भी लिंग की व्यवस्था है।

मैं पढ़ता हूँ।	–	मैं पढ़ती हूँ
हम पढ़ते हैं	–	हम पढ़ती हैं
तुम पढ़ते हो	–	तुम पढ़ती हो
आप पढ़ते हैं	–	आप पढ़ती हैं

Unit 20.indd 51 22/06/18 4:59 PM

21 वचन

शब्द-रचना में वचन का बड़ा महत्व है। किसी भी शब्द का प्रयोग एक के लिए हुआ है या अनेक के लिए हुआ है, यह जान लेना आवश्यक है।

शब्द के जिस रूप से इसका बोध हो कि वह एक के लिए प्रयुक्त है या अनेक के लिए, उसे वचन कहते हैं। हिंदी में वचन के दो भेद माने जाते हैं– 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

1. एकवचन – किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के एक होने का बोध शब्द के जिस रूप से हो, वह एकवचन है। जैसे– लड़का, कुरसी, कुत्ता, कलम, इमारत...

2. बहुवचन – व्यक्ति, वस्तु, स्थान के एक से अधिक होने का बोध शब्द के जिस रूप से हो, वह बहुवचन है। जैसे– लड़के, कुरसियाँ, कुत्ते, कलमें, इमारतें...

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, संबंध कारक (का, के, की) से वचन की पहचान की जा सकती है।

प्राण, होश, दर्शन, हस्ताक्षर, आँसू – ये शब्द हमेशा हिंदी में बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

सेना, प्रजा, जनता आदि कुछ शब्द हमेशा एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

वचन परिवर्तन के नियम :

वचन परिवर्तन के लिए शब्दों को वर्गीकृत कर लेना और उनका लिंग पहचानना ज़रूरी है। हिंदी के शब्दों को सामान्यतः छः वर्गों में विभाजित कर सकते हैं– अकारांत, आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत और ऊकारांत। इन छः वर्गों के शब्द पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में रहते हैं। एक वर्ग के पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन के लिए एक प्रकार से बदलता है, तो उसी वर्ग के स्त्रीलिंग शब्द का रूप दूसरे प्रकार से बदलता है।

1. अकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में नहीं बदलता। जैसे– एक घर – दस घर, एक हाथ – दो हाथ, एक वृक्ष – सौ वृक्ष....

2. अकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। अंत का 'अ' – 'एँ' हो जाता है। जैसे – कलम – कलमें, आँख – आँखें, दूकान – दूकानें....

Book 1.indb 52 21-06-2018 17:12:45

3. आकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। अंत का 'आ' – 'ए' हो जाता है। जैसे– बेटा – बेटे, कपड़ा – कपड़े, कमरा – कमरे....

4. आकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। शब्द के अंत 'एँ' जोड़ा जाता है। जैसे– माला – मालाएँ, सेना – सेनाएँ, यात्रा – यात्राएँ....

5. इकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में नहीं बदलता। जैसे– स्वामि, विधि (ब्रह्म) – विधि।

6. इकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। उसके साथ अंत में 'याँ' जोड़ा जाता है। जैसे– रीति – रीतियाँ, समिति – समितियाँ....

7. ईकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में नहीं बदलता। जैसे– एक आदमी – चार आदमी, एक भाई – तीन भाई, एक मोती – सात मोती....

8. ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। अंत के 'ई' को ह्रस्व बनाकर 'याँ' जोड़ा जाता है। जैसे– लड़की – लड़कियाँ, कुरसी – कुरसियाँ, धोती – धोतियाँ...

9. उकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में नहीं बदलता। जैसे– साधु – साधु, मधु – मधु....

10. उकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। शब्द के अंत में 'एँ' जोड़ा जाता है। जैसे– ऋतु – ऋतुएँ, वस्तु – वस्तुएँ, धातु – धातुएँ....

11. ऊकारांत पुल्लिंग शब्द का रूप बहुवचन में नहीं बदलता। जैसे– हिंदू – हिंदू, टापू – टापू....

12. ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्द का रूप बहुवचन में बदलता है। अंत के 'ऊ' को ह्रस्व बनाकर 'एँ' जोड़ा जाता है। जैसे– बहू – बहुएँ, वधू – वधुएँ....

वचन संबंधी कुछ अन्य नियम भी हैं-

अंत में जन, गण, लोग, वर्ग आदि लगाकर भी बहुवचन रूप बनाया जाता है। जैसे– गुरु – गुरुजन, लेखक – लेखकगण, महात्मा – महात्मा लोग, पुरुष – पुरुषवर्ग.....

स्त्रीलिंग शब्द के अंतिम 'या' को 'याँ' बनाकर भी बहुवचन रूप बनाया जाता है। जैसे– चिड़िया–चिड़ियाँ, बुढ़िया–बुढ़ियाँ, गुड़िया–गुड़ियाँ....

Book 1.indb 53 21-06-2018 17:12:45

साधारणतः हम बता सकते हैं कि पुल्लिंग शब्दों में आकारांत (लड़का, बेटा, घोड़ा...) शब्दों को छोड़कर बाकी कोई भी शब्द बहुवचन में नहीं बदलता जब कि सभी प्रकार के स्त्रीलिंग शब्द ज़रूर बदलते हैं।



I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. लिंग किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं?
2. वचन किसे कहते हैं? उसके प्रकार क्या-क्या हैं?

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. लिंग की परिभाषा देते हुए सोदाहरण लिखिए कि लिंग के कितने प्रकार हैं और वे क्या-क्या हैं?
2. हिंदी शब्दों के लिंग की पहचान किन-किन शब्दों से हो सकती है? उदाहरण देकर समझाइए।
3. वचन की परिभाषा देकर उसके भेदों पर सविस्तार लिखिए।
4. हिंदी में वचन-परिवर्तन संबंधी नियमों को उदाहरण सहित समझाइए।

Book 1.indb 54 21-06-2018 17:12:45

22 काल

हम किसी विषय के बारे में बोलते हैं या सुनते हैं, तो उसमें इसका बोध अवश्य होना चाहिए कि उक्त विषय बीते हुए समय में घठित हुआ या वर्तमान समय में घटित हो रहा है या आनेवाले समय में घटित होगा। अगर इसका बोध नहीं हुआ, तो बोलने या सुनने का उद्‌देश्य बेकार हो जाएगा। इस दृष्टि से भाषा में 'काल' का बड़ा महत्व रहता है।

क्रिया के जिस रूप से उसके करने या होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

प्रमुख रूप से काल के तीन भेद हैं– 1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल, 3. भविष्यत्काल।

भूतकाल — क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।

भूतकाल के सात भेद हैं– 1. सामान्यभूत, 2. आसन्नभूत, 3. पूर्णभूत, 4. अपूर्णभूत, 5. संदिग्धभूत, 6. संभाव्यभूत, 7. हेतुहेतुमद्‌भूत।

1. सामान्यभूत – यह भूतकाल का सामान्य रूप है। क्रिया का जो रूप भूतकाल को प्रकट करे, लेकिन उसकी समाप्ति का निश्चित समय प्रकट न करे, उसे सामान्य भूत कहते हैं।

जैसे — विघ्नेश ने पत्र लिखा।

– गायत्री ने गीत गाया।

– पिताजी पुस्तक लाये।

– हमने तुमको देखा।

2. आसन्नभूत – क्रिया का जो रूप यह प्रकट करे कि कार्य भूतकाल में शुरू होकर वर्तमानकाल में समाप्त हुआ है, अर्थात् अभी अभी समाप्त हुआ है, उसे सामान्यभूत कहते हैं।

जैसे — मैं आया हूँ।

– हमने पाठ लिखा है।

– नौकर दूध लाया है।

– उन्होंने ताजमहल देखा है।

Book 1.indb 55 21-06-2018 17:12:45

3. पूर्णभूत – क्रिया का जो रूप यह प्रकट करे कि कार्य भूतकाल में शुरू होकर भूतकाल में ही समाप्त हुआ था, अर्थात् समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका, उसे पूर्णभूत कहते हैं।

जैसे — दोस्त आया था।

– आप दिल्ली गये थे।

– मैंने उसे पैसा दिया था।

– वे हमसे मिले थे।

4. अपूर्णभूत – क्रिया का जो रूप यह प्रकट करे कि कार्य भूतकाल में शुरू हुआ, लेकिन यह प्रकट न करे कि समाप्त हुआ या नहीं, उसे अपूर्णभूत कहते हैं।

जैसे — विनायक खेल रहा था।

– माताजी गा रही थीं।

– तुम कुछ लिख रहे थे।

– सुधा पाठ याद कर रही थी।

5. संदिग्धभूत – क्रिया का जो रूप कार्य के भूतकाल में होने का सही बोध न कराए, अर्थात् संदेह प्रकट करे, उसे संदिग्धभूत कहते हैं।

जैसे — गाड़ी आयी होगी।

– आपने मुझे देखा होगा।

– लड़के स्कूल गये होंगे।

– बच्चे ने दूध पिया होगा।

6. संभाव्यभूत – यह क्रिया का वह रूप है, जिससे भूतकाल में क्रिया के होने की संभावना समझी जाए।

सामान्य भूतकालिक क्रिया पर पुरुष-लिंग-वचनानुसार 'हो', 'हों' आदि जोड़ने से संभाव्य भूतकालिक क्रिया बनती है।

Book 1.indb 56 21-06-2018 17:12:45

जैसे — शायद लड़की गयी हो।

— संभवतः लड़का गया हो।

— कदाचित् लड़के गये हों।

7. हेतुहेतुमद्भूत – क्रिया का जो रूप यह प्रकट करे कि कार्य का भूतकाल में होना संभव था, लेकिन किसी दूसरे कार्य के न होने से वह नहीं हुआ, उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते हैं।

जैसे — अध्यापक आते, तो छात्र भी आते।

– तुम देते, तो मैं लेता।

– विमला गाती, तो रमेश सुनता।

– लड़के खूब खेलते, तो ज़रूर जीतते।

वर्तमानकाल – क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय का बोध हो, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

वर्तमानकाल के तीन भेद हैं– 1. सामान्य वर्तमानकाल, 2. अपूर्ण वर्तमानकाल, 3. संदिग्ध वर्तमानकाल।

1. सामान्य वर्तमानकाल – क्रिया का जो रूप कार्य का वर्तमानकाल में होना बताए, लेकिन उसका निश्चित समय न बताए, उसे सामान्य वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे — हमारा भाई कालेज में पढ़ता है।

– पिताजी दफ़्तर में काम करते हैं।

– सुमति अच्छा गाती है।

– बच्चा दूध पीता है।

2. अपूर्ण वर्तमानकाल – क्रिया का जो रूप यह बताए कि कार्य अभी जारी है, पूर्ण नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे — हम पाठ लिख रहे हैं।

Book 1.indb 57 21-06-2018 17:12:45

– गाय चर रही है।

– माताजी वीणा बजा रही हैं।

– घोड़े दौड़ रहे हैं।

3. संदिग्ध वर्तमानकाल - क्रिया का जो रूप वर्तमान में कार्य के होने में संदेह प्रकट करे, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे — यह लड़का स्कूल में पढ़ता होगा।

– सुधा मुंबई में रहती होगी।

– गणेश और विमल कसरत करते होंगे।

– वे दोनों औरतें डाक-घर में नौकरी करती होंगी।

भविष्यत्काल – क्रिया के जिस रूप से आनेवाले समय का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं।

भविष्यत्काल के दो भेद हैं– 1. सामान्य भविष्यत्काल, 2. संभाव्य भविष्यत्काल।

1. सामान्य भविष्यत्काल – क्रिया का जो रूप कार्य का आम तौर पर आनेवाले समय में होना प्रकट करे, उसे सामान्य भविष्यत्काल कहते हैं।

जैसे — मोहन चेन्नई जाएगा।

– गीता मैदान में खेलेगी।

– मैं रोटी खाऊँगा।

– वे हमसे बात करेंगे।

2. संभाव्य भविष्यत्काल – क्रिया का जो रूप कार्य के आनेवाले समय में होने की उम्मीद या संभावना प्रकट करे, उसे संभाव्य भविष्यत्काल कहते हैं।

जैसे — इस साल खूब पानी बरसे।

– देश की आमदनी बढ़े।

Book 1.indb 58 21-06-2018 17:12:45

– आपका यश अमर हो।

– प्रजा स्वस्थ रहे।



I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. काल किसे कहते हैं?

2. प्रमुख रूप से काल के कितने भेद हैं? वे क्या-क्या हैं?

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. भूतकाल किसे कहते हैं? भूतकाल के कितने प्रकार हैं और वे क्या–क्या हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

2. वर्तमानकाल की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

3. काल की परिभाषा देते हुए लिखिए कि भविष्यकाल किसे कहते हैं? उसके भेद क्या–क्या हैं? उदाहरण दीजिए।

Book 1.indb 59 21-06-2018 17:12:45

निबंध

23

दीपावली



दीपावली हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्योहार है जो भारत भर में सभी हिन्दुओं से मनाया जाता है। दीपावली का अर्थ है दीपों की आवली, अर्थात् दीपों की पंक्ति। उत्तर भारत में यह त्योहार घर-घर में पंक्तियों में दीप जलाकर तीन दिन मनाते हैं। उनका विश्वास है (चन्द्रमान महीना– कार्तिक् नक्षत्र के दिन पूर्णिमा जिस मास में पड़ती है।) कार्तिक महीने की अमावश्या के दिन श्री रामचन्द्र जी रावण का वध करके सीता के साथ चौदह वर्षों के वनवास के अनन्तर विजयी रूप में वापस आये और उनका स्वागत, सारे अयोध्यावासियों ने घी के दीप जलाकर किया था। उसी परंपरा में आज भी वहाँ दीपावली उसी रूप में प्रतिवर्ष मनायी जाती है। दक्षिण भारत में (सौरमान महीना– अश्विनी नक्षत्र के दिन अमावश्या जिस मास में पड़ती है। (दोनों एक ही दिन में पड़ते हैं।) अश्विन महीने के चतुर्दशी के दिन तड़के यह त्योहार मनाते हैं। उनका विश्वास है कि उसी समय भौमनगर का क्रूर राक्षस राजा नरकासुर श्रीकृष्ण भगवान के द्वारा उसकी माता सत्यभामा के हाथों मारा गया और मरते समय उसने श्रीकृष्ण से यह माँगा कि मेरे इस मरण के दिन को, मेरी क्रूरता से मुक्ति पाने के आनन्द को, लोग खुशी के दिन के रूप में मनावें। श्रीकृष्ण ने हामी भर दी। उसी परंपरा में दक्षिण के लोग 'नरक चतुर्दशी' के रूप में यह त्योहार प्रतिवर्ष मनाते हैं।

उत्तर भारत में यह तीन दिनों का त्योहार है। पहला धनतेरस है। उस दिन उत्तर भारत के लोग, विशेषकर व्यापारी लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं। अतः उस दिन को वे लक्ष्मी-पूजा पर्व मानते हैं। पुराने बही-खाते समाप्त करके नयी बही-खाते खोलते हैं और अपना नव वर्ष आरंभ करते हैं। सारी रात घर को खुला रखते हैं इसी विश्वास पर कि लक्ष्मी किसी भी रास्ते से घर के अन्दर आ सकती हैं और दरवाज़ा बन्द रखने से कहीं वह लौट न जाए।

इस प्रकार उत्तर भारत में दीपावली मनाने के पीछे यह मुख्य कारण भी होता है कि वर्षा-ऋतु के चार मासों में व्यापार मन्द रहता है। जब वर्षा समाप्त होती है तो व्यापारी लोग यह आशा करने लगते हैं कि अब नये ढंग से व्यापार चमक उठेगा और उनके घरों में लक्ष्मी का आगमन होगा। अतएव वे लक्ष्मी की पूजा करते हैं। अमावश्या के दिन से नववर्षारंभ उनके लिए होता है। वे लोग नये कपड़े सिलवाते हैं, नये-नये पकवान और मिठाइयाँ बनाकर या बाज़ार में मिठाई

Book 1.indb 60 21-06-2018 17:12:46

की दूकानों से खरीदकर बन्धु-बांधवों में और मित्रों में बाँटकर खाते हैं। छोटे बच्चे फूल-झड़ियाँ, आतिशबाजी जलाकर छोड़ते हैं। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक उस दिन बहुत प्रसन्न रहकर तीन दिन यह त्योहार मनाते हैं। बड़े-बड़े धनी और व्यापारी लोग अपने नौकर-चाकरों में मिठाई और नये कपड़े बांटकर उन्हें प्रसन्न करते हैं।

लोगों के आनन्द की सीमा इतनी होती है कि वे दीपावली के दिन मित्रों से मिलकर जुआ खेलते हैं। जुए में जीतने से सारे वर्ष में धनी होने की वे संभावना भी करते हैं। लेकिन जुए में हारनेवालों का क्या हाल होगा? प्रसन्नता के इस पर्व के दिन में न जाने यह बुरी प्रथा कैसे घुस बैठी?

दक्षिण भारत में यह त्योहार जैसा कि पहले लिखा जा चुका है 'नरक चतुर्दशी' के दिन के रूप में ब्रह्म मुहूर्त में उठकर तैल-स्नान करके, नये सिलवाये कपड़े पहनकर नये-नये पकवान या मिठाइयाँ बंधुओं में, अड़ोस-पड़ोस के मित्रों में बाँटकर मनाते हैं। नये विवाहित दंपतियों के लिए यह 'शीर्ष दीपावली' के रूप में मनायी जाती है। दूसरे दिन-अमावश्या के दिन स्त्रियाँ घर के पुरुषों के सुखी भविष्य के लिए केदार गौरी व्रत रखती हैं। वैसे तो दक्षिण भारत में भी बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी के लिए यह प्रसन्नता का दिन है। नये विवाहित दम्पतियों की प्रसन्नता की सीमा ही नहीं रहती। नये दामाद को भेंट के रूप में गहने कपड़े भी दिये जाते हैं। गरीबों तथा नौकर–चाकरों में दीपावली-इनाम बाँटा जाता है।

मानव का जीवन कष्टों तथा आपदाओं से पूर्ण है। इनके बीच में खुशी के दिन के रूप में त्योहार मनाये जाते हैं। दीपावली त्योहार के समय कपड़ों के दूकानदारों, नये कपड़े सिलाने से दर्जियों, तथा नये कपड़े और मिठाई बाँटने से गरीबों और नौकर–चाकरों के पौ बारह हैं। परन्तु उत्तर भारत में हो, चाहे दक्षिण भारत में, आतिशबाजी छोड़नेवाले बच्चों-लड़कों की असावधानी से कितनों के कपड़े या अंग जल जाते हैं। कभी कभी गरीबों की झोंपड़ियों पर इन जलती आतिशबाजियों के लगने से उनके आग में जल जाने की संभावना भी होती है।

दीपावली–पर्व दिन के एक महीने पहले ही से कपड़े की दूकानों तथा नयी बनी आतिशबाज़ियों की दूकानों में बिजली के बल्ब या 'नियोन' दीप जगमगाने लगते हैं। उस पूरे महीने में सारा बाज़ार तथा शहर इन्द्रपुरी जैसा जगमग चमकने लगता है। दीपावली के दिन उत्तर भारतवालों के घरों में बिजली के बल्ब पंक्तियों में चमकते हैं। घरों को सब तरह से सजाकर सुन्दर बनाया जाता है। पूरे महीने में रंग बिरंगी फूल-झंडियों की रोशनी और पटाखों के ज़ोर-शोर से कोलाहल होता रहता है। रंक से लेकर रईस तक अपने दुखमय जीवन को एकदम भूलकर ऐसे आनन्द-मग्न हो जाते हैं मानो उनके जीवन में आनन्द ही आनन्द बना रहता है। असावधानी से छोड़ी गयी आतिशबाज़ियों से आगजनी को रोकने के लिए आजकल आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा

Book 1.indb 61 21-06-2018 17:12:46

लोगों को सावधान किया जाता है।

बड़े तड़के से लोग आनन्द में मग्न होकर इतने थक जाते हैं कि दीपावली की रात घरों में चोरी भी हो जाती है। उत्तर भारत के लोग जुआ खेलते हैं। वैसे तो दीपावली आनन्द का दिन है। उपर्युक्त दो बुराइयों से बच जाएँ तो यह पर्व-दिन सचमुच आनन्द का दिन हो जाता है।

Book 1.indb 62 21-06-2018 17:12:46

निबंध

24

अनुशासन

अनुशासन का अर्थ है शासन के अनुसार चलना। अर्थात् हर एक व्यक्ति को समाज के जो नियम निर्धारित हैं, उनके अनुसार चलना ही अनुशासन कहलाता है। विद्यालय के विद्यार्थी को विद्यालय के नियमों का पालन करना आवश्यक है। घर के बुजुर्गों का, समाज के बुजुर्गों का आज्ञा पालन करना भी अनुशासन ही है। खेल-कूद के मैदानों में खेल-कूद के नियमों का पालन करना भी अनुशासन के अन्तर्गत है। शासन-यंत्र में अधिकारियों की आज्ञा का पालन करना तथा कार्यालय के नियमों को मानकर काम करना भी अनुशासन ही कहलाता है। किसी भी सभा-संस्थाओं के सदस्यों का उन संस्थाओं के नियमों का पालन अनुशासन ही माना जाता है। जो अनुशासित होता है, उसकी आज्ञाओं से दूसरे लोग अनुशासित हो जाएँगे। अतः अनुशासन की प्रतीक्षा हम तभी कर सकते हैं जब हम अपने को अनुशासित रखेंगे।

अब हम देखें अनुशासन का पालन कहाँ-कहाँ और कैसे-कैसे होता है तथा अनुशासनहीनता से क्या परिणाम निकलता है।

घर में माता-पिता अपने बाल-बच्चों का भरण-पोषण करते हैं तो उनको कुछ नियमों के अधीन करके ही प्रेम से उनको अच्छे आचरण की शिक्षा देते हैं। यदि माँ-बाप अनुशासनहीन जीवन बिताते हैं तो वे कैसे अपनी संतानों से अनुशासन की प्रतीक्षा कर सकते हैं? बाल-बच्चों के सामने अच्छे-अच्छे आचरणों का उदाहरण प्रस्तुत करके और इतिहास, पुराणों के महान पुरुषों के जीवन-चरित्र का नमूना प्रस्तुत करके उनके चरित्र को अच्छे सांचे में ढालकर उन्हें चरित्रवान बना सकते हैं। छोटे-छोटे बच्चों के जीवन के निर्माण का भार उनके माँ-बाप तथा आदर्श अध्यापकों के हाथ में है। कहा जाता है कि भावी नागरिकों को विद्यालय की कक्षाओं में निर्मित किया जाता है। यदि माँ-बाप या अध्यापक आदर्श एवं अनुकरणीय नहीं हों तो उनसे पालित-पोषित पुत्र या उनके तैयार किये विद्यार्थी का भावी जीवन नियमित न होकर, उच्छृंखल होकर समाज तथा देश के लिए हानिकारक हो जाएगा। बच्चों के जीवन में जो आदत पड़ जाती है, वह उनके जीवन भर उनके साथ ही रहेगी। यदि वे आदतें उत्तम एवं आदर्श रहेंगी तो उनका भावी जीवन मंगलमय रहेगा तथा देश के लिए कल्याणकारी बनेगा।

मानव ईश्वर की सृष्टि का विशेष ज्ञान भी अर्जन कर लेता है, जिसे हम विज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक विवेक से मानव ने अपने लिए, अपने शारीरिक सुख-सौख्य के लिए कई आविष्कार कर लिये हैं। इन वैज्ञानिक साधनों का सही उपयोग करने से ही वह सुखी रह सकता है।

Book 1.indb 63 21-06-2018 17:12:46

मानव समझता है कि उसने प्रकृति पर विजय पा ली है। लेकिन वह कैसे? प्रकृति के नियमों को जानकर और मानकर चलने से ही वह संभव हुआ है। पशु-पक्षियों ने अनजाने ही, अपनी सहजानुभूति से ही, प्रकृति के नियमों का पालन कर अनुशासित होकर जीवन में विकास पाया है। परन्तु मानव अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करके अविवेक से पतन की ओर पदार्पण करता है। यदि वह प्रकृति प्रदत्त या ईश्वर प्रदत्त बुद्धि का सदुपयोग करे तो वह महान बन जाएगा इसमें कोई संदेह नहीं है।

संसार में जितने महान शासक हुए हैं, धार्मिक गुरु हुए हैं जैसे राम, कृष्ण, रामकृष्ण परमहंस, राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, महावीर जैन, महात्मा बुद्ध, हज़रत मुहम्मद, ईसा मसीह–ये सब अनुशासित जीवन के ही उदाहरण हैं। अतः प्रत्येक मानव के जीवन में अनुशासन निदान्त आवश्यक गुण है।

Book 1.indb 64 21-06-2018 17:12:46

25 आवेदन पत्र

त्रिवेणी प्रकाशन, चेन्नई को प्रूफ़-संशोधक की आवश्यकता है। उक्त पद के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

125, गाँधी नगर, पहली गली

अड़यार, चेन्नई - 20.

19 सितम्बर 2018

सेवा में

सर्वश्री त्रिवेणी प्रकाशन,

18, राजा स्ट्रीट,

सैदापेट, चेन्नई - 15.

प्रिय महोदय,

मैंने आज 'दक्षिण भारत राष्ट्रमत' दैनिक समाचार-पत्र में आपके प्रकाशन का विज्ञापन देखा, जिससे पता चला कि आपके प्रकाशक को प्रूफ़-संशोधक की आवश्यकता है। मैं अपना आवेदन पत्र आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूँ।

मैंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 2011 में हिंदी उत्तमा 'साहित्य रत्न' परीक्षा और दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मैं पिछले से राजलक्ष्मी प्रकाशन में प्रूफ़ संशोधक के पद पर कार्यरत हूँ।

मैं यह आश्वासन देता हूँ कि आपके प्रकाशन में यदि मुझे सेवा करने का अवसर दिया जाएगा, तो पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ मैं अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करूँगा।

आशा है कि आप मेरे आवेदन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

ह./xxxxx

एस.विजयकुमार

Book 1.indb 65 21-06-2018 17:12:46

अनुवाद अभ्यास

26

अपूर्ण वर्तमानकाल

PRESENT CONTINUOUS TENSE

अंग्रेज़ी में लिखिए:-

1. हम पढ़ रहे हैं। - We are reading
2. वह आ रहा है। - He is coming
3. तुम जा रहे हो। - You are going
4. वे लिख रहे हैं - They are writing
5. मैं खा रहा हूँ - I am eating.

हिंदी में लिखिए:-

1. We are listening. - हम सुन रहे हैं
2. Teacher is teaching lesson - अध्यापक पाठ सिखा रहे हैं।
3. Child is crying. - बच्चा रो रहा है।
4. Mother is cooking. - माँ रसोई बना रही है।
5. Tailor is stitching. - दर्जी सी रहा है।

Unit 26.indd 66 22/06/18 5:01 PM

TERM - 3

गद्य

27

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती



तमिलनाडु का कौन ऐसा आदमी होगा, जो कवि सुब्रह्मण्य भारती का नाम न जानता हो। जब हमारा देश गुलामी के शिकंजे में पड़ा हुआ था, तब भारती ने अपनी कविताओं के द्वारा जनता को जगाने का प्रयत्न किया। उन्होंने जनता में केवल जागरण ही नहीं, बल्कि बल और उत्साह भी पैदा किया। उन्होंने जनता में केवल जागरण ही नहीं अपितु जन-मानस में बल और उत्साह और भी संचार किया।

तमिलनाडु के तूत्तुकुडि जिले में एक छोटा-सा गाँव एट्ट यपुरम है। वहाँ ईस्वीं सन् 1882 में दिसम्बर 10 को भारती का जन्म हुआ। भारती के पिता चिन्नस्वामी अय्यर थे और माँ श्रीमती लक्ष्मी अम्माल थी। भारती के बचपन में ही उनकी माता स्वर्ग सिधारी और उनके 25 वर्ष की आयु में उनके पिता भी स्वर्ग सिधारे।

भारती अपने बचपन से ही कविताएँ लिखकर 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' कहावत को चरितार्थ करते थे। एट्टयपुरम के ज़मीन्दार के यहाँ कवियों का आदर-सत्कार होता था और कवि-मंडलियाँ भी होती थीं। इन कवि-मंडलियों में बालक भारती भी भाग लेता था। भारती के पिता भी तमिल के अच्छे विद्वान थे। अतः भारती बचपन से काव्य रचना करने लगे थे।

स्कूली पढ़ाई के बाद भारती बनारस में अपनी बुआ के पास तीन साल रहे। वही रहकर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा पास की और हिन्दी का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। एट्टयपुरम के ज़मीन्दार से निमंत्रण मिलने पर वे अपने गाँव वापस आये। कुछ समय तक वे उनके यहाँ नौकरी करते रहे। इसी समय उनका विवाह हुआ। विवाह के समय वे सोलह-सत्रह वर्ष के थे।

उन्नीस बरस की उम्र में भारती को अपनी जीविका के लिए परिवार के साथ गाँव छोड़ना पड़ा। पहले कुछ दिनों तक मदुरै में वे तमिल के अध्यापक रहे। फिर "स्वदेशमित्रन" नामक

Unit 27.indd 68 22/06/18 5:04 PM

अखबार के सहायक संपादक बने। संपादन कार्य के साथ अपनी तेज़ वाणी को प्रकट करने के लिए और अपने देशवासियों के विचारों में क्रांति पैदा करने हेतु निरंतर काव्य-रचना करते रहे।

अपने साहित्यिक योगदान के कारण भारती जनता के बीच अत्यधिक लोक प्रिय हुए। उनकी लेखनी में मुर्दों में भी जान फूँकने की शक्ति थी। देशभक्ति से भरी हुई उनकी जोशीली कविताएँ घर-घर गायी जाने लगीं। यह देखकर सरकार के कान खड़े हो गये। भयभीत होकर सरकार ने उनकी सारी कविताओं को ज़ब्त कर लिया और उन्हें कैद करने को तैयार हुई।

कैद होने से बचने के लिए सन् 1908 में भारती पांडिच्चेरी गये। वहाँ रहकर जनता की सेवा करने लगे। पांडिच्चेरी में उन्होंने कई तरह के कष्ट भोगे। इसके बारे में उन्होंने स्वयं बताया है कि पांडिच्चेरी का मेरा जीवन आर्थिक दृष्टि से नरक तुल्य था।

खाने के लिए कुछ नहीं, कमाने का कोई रास्ता नहीं, कर्ज़ तक देनेवाला कोई मित्र नहीं। साथ-साथ सरकारी कर्मचारी और पुलिस के अत्याचार।

परंतु पांडिच्चेरी के शांत वातावरण और व.वे.सु. अय्यर, अरविन्द आदि की सत्-संगति में उनकी प्रतिभा का पूर्ण विकास हुआ।

लेकिन भारती की दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। आखिर सन् 1918 में भारती फिर मद्रास आये और नौकरी के लिए उनको कुछ समय तक इधर-उधर भटकना पड़ा। अंत में दुबारा वे "स्वदेशमित्रन" के सहायक संपादक बने। सन् 1921 सितंबर 11 को भारती का देहांत हुआ। मृत्यु के समय उनकी उम्र केवल 38 वर्ष का था।

अभ्यास

1. हिन्दी में अर्थ लिखिए :-

(1) प्रतिभा (2) स्वर्ग सिधारना (3) चमत्कार

(4) जान फूँकना (5) अत्याचार

2. विलोम शब्द लिखिए :-

(1) उत्साह (2) बिगड़ना (3) मुर्दा (4) सत्-संगति

Unit 27.indd 69 22/06/18 5:04 PM

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) शामिल होना (2) लोक प्रिय (3) कर्मचारी (4) संपादक

4. सही उत्तर चुनकर फिर लिखें :-

(1) श्री. भारती का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(2) श्री. भारती के माँ-बाप कौन थे?

(3) श्री. भारती को बनारस क्यो जाना पड़ा?

(4) श्री. भारती मदुरै में क्या करते थे?

(5) श्री. भारती का देहांत कब और कहाँ हुआ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।

(1) श्री सुब्रह्मण्य भारती ने आम जनता में किस प्रकार बल और उत्साह संचार किया।

(2) एट्टयपुरम जमींदार के आश्रय में भारती क्या करते थे।

(3) श्री भारती को क्यों मदुरै जाना पड़ा और वहाँ क्या करते थे?

(4) श्री भारती का जीवन पांडिच्चेरी में किस तरह बीता?

(5) पत्रकार के रूप में श्री भारती की सेवा के बारे में प्रकाश डालिए।

Unit 27.indd 70 22/06/18 5:04 PM

पद्य

28

निश्चित मार्ग

श्रीमती - सुभद्राकुमारी चौहान



द्यकवि परिचयः सुभद्राकुमारी का जन्म सन् 1904 में इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के एक संपन्न परिवार में हुआ। बचपन से ही इनको हिंदी के काव्यग्रंथों से विशेष प्रेम था। उन्होंने प्रथम काव्य रचना 15 वर्ष की आयु में की। इनका विवाह खंडवा (मध्यप्रदेश) निवासीठा लक्ष्मण सिंह चौहान से हुआ। विवाह के साथ ही इनके जीवन-क्रम में एक नया मोड़ आ गया। पति के साथ वे भी महातमा गाँधी के आंदोलन से जुड़ गयी और राष्ट्र प्रेम पर कविताएँ लिखने लगी।

सुभद्राकुमारी चौहान की काव्य साधना के पीछे उनका देश-प्रेम, साहस और बलिदान की भावना है। वे राष्ट्रीय आंदोलन में बराबर सक्रिय भाग लेती रही। कई बार जेल भी गयीं। देश को आज़ाद बनाने के लिए जेल-जीवन की यातनाएँ सहने में इनहें जितना सुख मिलता था। उतना ही सुख उन सात्विक अनुभूतियों को कविता द्वारा व्यक्त करने में भी मिलता था।

साहित्यिक और राजनैतिक जीवन में समान रूप से भाग लेकर अंत तक देश की एक जागरूक नारी के रूप में अपना कर्तव्य निभाती रहीं।

सुभद्राकुमारी चौहान मुख्यतः कवयित्री थीं। उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियों विशष रूप से महत्व की हैं - पहली तो, राष्ट्रीय भावना की ओर दूसरी घरेलू जीवन की। उनकी राष्ट्रीय कविताओं में सामाजिक, देश प्रेम और भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप है।

सुभद्राकुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं में जिस प्रतिभा के साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय भावनाओं को समसामयिक राजनैनिक जीवन के तत्कालीन संदर्भों से जोड़ा, उससे उनकी प्रतिभा का विशेष परिचय प्राप्त होता है। सुभद्राकुमारी चौहान ने कहानी और निबंध विधा में भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की है। उनकी कहानियाँ राष्ट्र संबंधी आदर्श और यथार्थ के ममस्पर्शी संघर्षों पर आधारित हैं। सन् 1948 में मृत्यु ने उन्हें अकाल ही ग्रंस लिया।

Unit 28.indd 71 22/06/18 5:53 PM

सुभद्राकुमारी चौहान ने साहित्य की अन्य विधाओं पर भी अपनी सभी लेखनी चलायी। आपकी कहानियों पर हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से दो बार 'सेकसरिया' पुरस्कार मिला था। 'बि-खरेमोती' 'उन्मादिनी' उनके कहानी संग्रह हैं। आपने अनेक निबंध भी लिखे हैं।

क्या कहते हो? किसी तरह भी

भूलूँ और भुलाने दूँ?

गत जीवन को तरल मेघ-सा

स्मृति-नभ में मिट जाने दूँ?

कैसे निश्चित मार्ग? हृदय धन

समझ नहीं पाती हूँ मैं

वही समझने एक बार फिर

क्षमा करो, आती हूँ, मैं।

जहाँ तुम्हारे चरण, वहीं पर

पद-रज बनी पड़ी हूँ मैं

मेरा निश्चित मार्ग यही है

ध्रुव-सी अटल अड़ी हूँ मैं।

मुझे छोड़कर तुम्हें, प्राणधन!

सुख या शांति नहीं होगी

यही बात तुम भी कहते थे

सोचो, भ्रांति नहीं होगी

मुझको कैसे भूल सकोगे

जीवन-पथ-दर्शक! मैं थी

प्राणों की थी प्राण हृदय की

Unit 28.indd 72 22/06/18 5:53 PM

सोचो तो, हर्षक मैं थी

आओ चलो, कहाँ जाओगे

मुझे अकेली छोड़, सके!

बँधे हुए हो हृदय-पाश में

नहीं सकेगे तोड़, सखें

कठिन शब्दार्थ

तरल	-	चलिचित्त, चंचल	हर्षक	-	आनंद प्रदान करनेवाला
पद	-	पैर का धूल	पाश	-	बंधन, फंदा
अटल	-	सख्त	पथ	-	दर्शक
अड़ना	-	चिपकना	गत	-	पिछलना
भ्रांति	-	भ्रम	नभ	-	आकाश

कविता का सारांश

कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान अपनी रचनाओं में सांस्कृतिक, इतिहासिक, राष्ट्रीय भावन्-ाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करती हैं।

वे 'निश्चित मार्ग' में अपने जीवन के निश्चित मार्ग के लिए सुझाव देने की प्रार्थना अपने प्रियतम से करती हैं। प्रियतम से प्रश्न उठाती हैं - "गत जीवन की यादों को भूलूँ"? इस शंका का समाधान मांगकर प्रियतम की ओर निकलती हैं। कवयित्री अपने प्रियतम के पाँव पड़कर उनकी पद - रज बनने में अड़ी रहती हैं। कवयित्री का कथन है कि प्रियतम के मिलन से ही, सुख या शांती मिलेगी। आप अपने प्रियतम को प्राण और हृदय समान मानती हैं। प्रियतम बंधन तोड़नेवाला भी नहीं, छोड़नेवाला भी नहीं।

इस कविता में कवयित्री मार्मिक विषयों को सरल छायावादी ढंग से व्यक्त करती हैं।

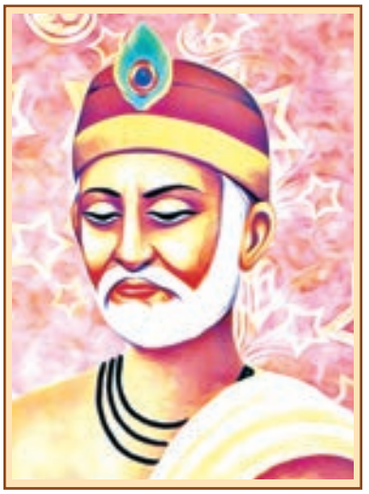
Unit 28.indd 73 22/06/18 5:53 PM

पद्य

29

कबीर के दोहे

श्रीमती - सुभद्राकुमारी चौहान



कवि परिचय: संत कबीरदास के दोहे गागर में सागर के समान हैं। उनके गूढ़ अर्थ समझकर यदि कोई उन्हें अपने जीवन में उतारता है तो उसे निश्चय ही मन की शांति के साथ-साथ ईश्वर की प्राप्ति होगी। इनका जन्म वारणासी के निकट लहर तारा नागक स्थान में करीब 1398 या 1440 के बीच में हुआ था। इनका देहांत मगहर में हुआ। वे पढ़े-लिखे नहीं थे। इनके शिष्यों ने इनकी वाणी को लिपिबद्ध किया। अपनी रचनाओं में अनेक अलंकारों का अत्यधिक प्रयोग इन्हों ने किया है।

कबीर हमारा कोई नहीं हम काहू के नाहिं।

पारै पहुँचे नाव ज्यों मिलिके बिछुरी जाहिं।

अर्थ: इस जगत में न कोई हमारा अपना है और न ही हम किसी के। जैसे नाव के नदी पार पहुँचने पर उस में मिलकर बैठे हुए सब यात्री बिछुड़ जाते हैं। वैसे ही हम सब मिलकर बिछुड़नेवाले हैं, सब सांसारिक संबंध यहीं छूट जानेवाले हैं।

जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तरवार को पड़ा रहन दो म्यान।

अर्थ: सच्चा साधु सब प्रकार के भेद भावों से ऊपर उठ जाते हैं। उससे यह न पूछो कि वह किस जाति का है साधु कितना ज्ञानी है। यह जानना महत्वपूर्ण है। साधु की जाति म्यान के समान है और उसका ज्ञान तलवार की धार के समान है। तलवार की धार ही उसका मूल्य है–उसकी म्यान तलवार के मूल्य को नहीं बढ़ाती।

Book 1.indb 74 21-06-2018 17:12:47

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।

अर्थः मैं इस संसार में बुरे व्यक्ति की खोज करने चला था। लेकिन जब अपने घर - अपने मन में झाँक कर देखा तो खुद से बुरा कोई न पाया अर्थात् हम दूसरे की बुराई पर नज़र रखते हैं पर अपने आप को नदी निहारते।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।

पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।

अर्थः खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने का क्या लाभ जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है और न ही उसके फल सुलभ होते हैं।

जिन खोजा तन पाइया, गहरे पानी पैठ।

मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।।

अर्थः जो प्रयत्न करते हैं, वे कुछ न कुछ वैसे ही पा ही लेते हैं। जैसे कोई मेहनत करनेवाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है और कुछ लेकर आता है। लेकिन कुछ बेचारे लोग ऐसे भी होते हैं, जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं और कुछ नहीं पाते।

Book 1.indb 75 21-06-2018 17:12:47

संक्षिप्त अध्ययन

30 एकता का फल

एक दिन एक शिकारी शिकार खेलने जाल लेकर जंगल में गया। एक जगह पर उसो चावल के दाने छिड़के। उनपर जाल बिछाकर झाड़ों के बीच छिपकर बैठ गया।

थोड़ी देर में आसमान में कबूतरों का एक झुंड उड़ता हुआ आया। उस झुंड का मुखिया चित्रग्रीव था। वह बड़ा बुद्धिमान था। जब कबूतरों ने चावल के दाने देखकर नीचे उतरना चाहा तब चित्रग्रीव ने कहा– "इतने घने जंगल के बीच चावल के दाने कहाँ से आये? यह सोचने की बात है। बिना सोचे उतरेंगे तो विपत्ति में फँस जाएँगे।"

यह सुनकर एक छोटे कबूतर ने कहा– "क्या हम खाने के लिए भी आज़ाद नहीं हैं? इतनी छोटी बात पर भी संदेह करेंगे, तो जीना मुश्किल हो जाएगा। अब की बार आपकी बात हम नहीं मानेंगे" उस छोटे कबूतर की बात बाकी कबूतरों को अच्छी लगी। सब कबूतर दाने चुगने नीचे उतरे तो जाल में फँस गये। अब सभी कबूतर छोटे कबूतर की निंदा करने लगे।

चित्रग्रीव ने कहा– "विपत्ति के समय में ही हमें धैर्य रखना चाहिए। किसी की निन्दा करने से विपत्ति दूर नहीं होगी। सब एक साथ मिलकर उड़ना शुरू करो। बाद में बचने का उपाय सोचेंगे।" यह सुनकर सभी कबूतर एक साथ जाल लेकर ऊपर उड़े। शिकारी ने कुछ दूर तक उनका पीछा किया। लेकिन कबूतर उसकी आँखों से ओझल हो गये। बेचारा शिकारी निराश होकर घर लौटा।

कबूतर जाल के साथ उड़ते–उड़ते एक नदी के किनारे पर उतरे। वहाँ चित्रग्रीव का एक दोस्त चूहा रहता था। चित्रग्रीव की आवाज़ सुनकर चूहा खुश हुआ। उसने अपने पैने दाँतों से जाल काटकर सब कबूतरों को आज़ाद किया।

सीख :– अनुभव का तिरस्कार आपत्ति का बुलावा है।

Book 1.indb 76 21-06-2018 17:12:47

31 संज्ञा

किसी व्यक्ति, स्थान, जाति, भाव और संबंध को सूचित करनेवाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के तीन भेद होते हैं– 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – किसी विशेष व्यक्ति या विशेष स्थान या विशेष वस्तु का बोध करानेवाली संज्ञा व्यक्तिवाचक संज्ञा है। जैसे– महात्मा गाँधी, कन्याकुमारी, कमल, भगवद्गीता....।

2. जातिवाचक संज्ञा – किसी जाति के एक ही प्रकार के प्राणियों या वस्तुओं या स्थानों का बोध करानेवाली संज्ञा जातिवाचक संज्ञा है। जैसे– बालक, विद्यार्थी, शहर, देश, लेखनी, वाहन....। जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं -

1. द्रव्यवाचक संज्ञा जिन शब्दों से किसी पदार्थ या धातु का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहने दें। दूध, घी, पानी आदि।

2. समूहवाचक संज्ञा जो शब्द किसी समूह या समुदाय को बोध कराते हैं। उन्हें समूहवाचक

संज्ञा कहते हैं। उदाहरण - भीड़, मेला, झुंड आदि।

3. भाववाचक संज्ञा – किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, आधार, दशा, भाव आदि का बोध करानेवाली संज्ञा भाववाचक संज्ञा है। भाववाचम संज्ञाओं का संबंध हमारे भावों से होता है। इनका कोई रूप या आकार नहीं होता। ये अभूर्त (अनुभव किए जानेवाले) शब्द होते हैं। जैसे– सज्जनता, नीचता, लंबाई, ऊँचाई, सुंदरता, बचपन, गरीबी, भक्ति, दयालुता....।

भाववाचक संज्ञाएँ चार प्रकार के शब्दों से बनती हैं– 1. जातिवाचक संज्ञा से, 2. सर्वनाम से, 3. विशेषण से, 4. क्रिया से।

Book 1.indb 77 21-06-2018 17:12:47

जातिवाचक संज्ञा से	–	मनुष्य	–	मनुष्यता
	–	पशु	–	पशुत्व
	–	शहर	–	शहरीकरण
	–	राष्ट्र	–	राष्ट्रीयता
सर्वनाम से	–	अपना	–	अपनापन
	–	मम	–	ममता
	–	निज	–	निजत्व
विशेषण से	–	चौड़ा	–	चौड़ाई
	–	गरम	–	गरमी
	–	बड़ा	.–	बड़प्पन
	–	सुंदर	.–	सुंदरता
क्रिया से	–	गा	.–	गाना
	–	उड़	.–	उड़ान
	–	चल	.–	चाल
	–	पहन	.–	पहनावा



I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. संज्ञा की परिभाषा दीजिए।

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. संज्ञा किसे कहते हैं और उसके कितने प्रकार हैं।

2. भाववाचक संज्ञा की परिभाषा देते हुए सोदाहरण लिखिए कि भाववाचक संज्ञाएँ किन-किन शब्दों से बनती हैं?

Book 1.indb 78 21-06-2018 17:12:47

32 सर्वनाम

वाक्यों में एक ही शब्द बार-बार आए, तो भद्दा-सा लगता है। जैसे-राम गणेश का बेटा है। राम अच्छा लड़का है। राम स्कूल में पढ़ता है। राम साइकिल से स्कूल जाता है। इन वाक्यों में राम शब्द के बार-बार आने से पढ़नेवाला या सुननेवाला ऊब-सा जाता है। यदि पहले वाक्य में 'राम' और अन्य वाक्यों में 'वह' शब्द का प्रयोग हो, तो अच्छा लगता है।

संज्ञा के बदले उसी अर्थ में प्रयुक्त होनेवाला शब्द सर्वनाम है। यह वचन, विभक्ति आदि के कारण बदलता है, इसलिए सर्वनाम विकारी शब्द है। जैसे–मैं, हम, तुम आप, वह, वे....

सर्वनाम के प्रधानतः छः भेद हैं – 1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निश्चयवाचक सर्वनाम, 3. अाश्चियवाचक सर्वनाम, 4. संबंधवाचक सर्वनाम, 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 6. निजवाचक सर्वााम।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति अपने लिए, सुननेवाले या पढ़नेवाले के लिए और किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करे, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–मैं (बोलनेवाला) चेन्नई का रहनेवाला हूँ। तुम (सुनन्-ोवाला) मेरी बात मानते हो। वह (अन्य व्यक्ति) मेरा दोस्त है। यह (अन्य वस्तु) मेज़ पर है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद हैं–

अ) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम – बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करे, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–मैं, हम

आ) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम – बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति सुननेवाले या पढ़नेवाले व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करे, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– तू, तुम, आप।

इ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम – बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करे, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे--वह, यह, वे, ये।

Book 1.indb 79 21-06-2018 17:12:47

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु या विषय के लिए प्रयुक्त होनेवाला सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम है। जैसे– वह मेरी कलम है। वे मोहन के भाई हैं। यह धीरे-धीरे चलता है। ये हमारे अध्यापक हैं।

यह, वह, ये, वे – ये निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनामों से निश्चित व्यक्ति या वस्तु या विषय का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– दिल्ली से कोई आया है। कुछ लेते जाओ। उसने कुछ नहीं कहा।

कोई, कुछ – ये अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – एक बात का संबंध दूसरी बात के साथ प्रकट करनेवाला सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम है। जैसे–जो मेरा मित्र है, वह आपका भी मित्र है। जो बात आपने कही, वह सही है।

जो–वह – ये संबंधवाचक सर्वनाम हैं।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – प्रश्न का बोध करानेवाला सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम है। जैसे – वहाँ कौन जा रहा है? दीवार पर क्या है?

कौन, क्या – ये प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

इनमें 'कौन' प्रायः प्राणीवाचक शब्दों के लिए और 'क्या' प्रायः पदार्थवाचक शब्दों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम – 'स्वयं' का अर्थ प्रकट करनेवाला सर्वनाम निजवाचक सर्वन्-ाम है। जैसे – मैं यह काम आप करता हूँ। तुम यह काम खुद करो। वे यह काम स्वयं करते हैं।

Book 1.indb 80 21-06-2018 17:12:47

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. सर्वनाम की परिभाषा दीजिए।

2. सर्वनाम के कितने भेद हैं और वे क्या-क्या हैं?

3. 'कोई' और 'कुछ' निश्चयवाचक सर्वनाम हैं या अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं?II.

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. सर्वनाम किसे कहते हैं? उसका उपयोग बताकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम की परिभाषा देते हुए उसके भेदों को सोदाहरण लिखिए।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं और 'कोई' और 'कुछ' के प्रयोग में क्या अंतर है? समझाइए।

Book 1.indb 81 21-06-2018 17:12:47

33 क्रिया

क्रियाहीन मनुष्य को मनुष्य नहीं कहते। जैसे मानव जीवन में क्रिया का महत्व है, वैसे ही भाषा में भी। मानव आजीवन कुछ-न-कुछ करता ही रहता है और उसके चारों ओर कुछ-न-कुछ होता ही रहता है। ये करना और होना उसकी बोली में आते ही रहते हैं।

किसी कार्य का करना या होना बतानेवाला शब्द क्रिया है। संज्ञा या सर्वनाम के अनुसार या समय-समय पर कर्म के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप में परिवर्तन होता है। अतः क्रिया एक विकारी शब्द है।

क्रिया के मूल या सामान्य रूप को 'धातु' कहते हैं।

कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद होते हैं– 1. अकर्मक, 2. सकर्मक।

1. अकर्मक क्रिया – जिस क्रिया का कर्म नहीं होता और क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– लड़का जाता है। बच्चा रो रहा है। सरला आएगी। पिताजी पाँच बजे उठे।

उपरोक्त 'जाता है', 'रो रहा है', 'आएगी', 'उठे' आदि क्रियाओं का कर्म नहीं होता और इनका फल कर्ता पर ही पड़ता है। इसलिए ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

2. सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया का कर्म होता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– दिनेश पुस्तक पढ़ता है। कमला वीणा बजा रही है। मैं रोटी खाऊँगा। लड़कियों ने गीत गाया।

उपरोक्त 'पढ़ता है', 'बजा रही है', 'खाऊँगा', 'गाया' आदि क्रियाओं के पुस्तक, वीणा, रोटी, गीत आदि कर्म होते हैं और उनका फल कर्म पर ही पड़ता है। इसलिए ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

बनावट की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं– 1. मूल क्रिया, 2. यौगिक क्रिया।

1. मूल क्रिया – जो क्रिया किसी दूसरी धातु से या शब्द से न बनी हो, उसे मूल क्रिया कहते हैं। जैसे– आ, जा, उठ, बैठ....

Book 1.indb 82 21-06-2018 17:12:47

2. यौगिक क्रिया – जो क्रिया किसी दूसरी धातु या शब्द से बनी हो, उसे यौगिक क्रिया कहते है। जैसे — पढ़ा (पढ़), बुलवा (बुला), मार (मर), खिला (खा)....

यौगिक क्रिया के पाँच प्रकार हैं– 1. प्रेरणार्थक क्रिया, 2. नामधातु, 3. संयुक्त क्रिया, 4. सहायक क्रिया, 5. अनुकरणवाचक।

1) प्रेरणार्थक क्रिया – क्रिया का कर्ता खुद वह काम न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा दे, उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। इसे पहली प्रेरणार्थक क्रिया भी कहते हैं। कर्ता वह काम करने की प्रेरणा दूसरे द्वारा तीसरे को दे, उस क्रिया को दूसरी प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

जैसे	—	पढ़	–	पढ़ा	–	पढ़वा
कर	–	करा	–	करवा		
खा	–	खिला	–	खिलवा		
दे	–	दिला	–	दिलवा		

2) नामधातु – क्रिया शब्द को छोड़कर अन्य शब्दों के साथ प्रत्यय लगाकर जो क्रिया बनी हो, उसे नामधातु कहते हैं। जैसे — हथिया (हाथ), बतिया (बात), लजा (लाज), सजा (साज)....

3) संयुक्त क्रिया – दो या तीन मूल धातुओं के मिलने से जो क्रिया बनी हो, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं. जैसे — मैं गाने लगा (आरंभ बोधक) हम उधर पहुँच नहीं पाये (अवकाश बोधक), मेरी बहन गाना चाहती है (इच्छा बोधक), लड़का पढ़ चुका (समाप्ति बोधक), आप यह काम कर सकते हैं (शक्ति बोधक), पिताजी चौंक उठे (आकस्मिकता बोधक), बच्चा गिर पड़ा (पूर्णता बाधक), लड़के खेल रहे हैं (निरंतरता बोधक), मुझे बोलना पड़ा (विवशता बोधक), मैं यह काम कर डाला (काल बोधक), निर्मला पढ़ाई में लगी रहती है। (स्थिरता बोधक)

4) सहायक क्रिया – मुख्य क्रिया की काल-रचना में सहायता करनेवाली क्रिया सहायक क्रिया है। जैसे — अध्यापक आये हैं। अध्यापक आये थे। अध्यापक आये होंगे।

5) अनुकरणवाचक – ध्वनि या दृश्य के अनुसार जा क्रिया बने, उसे अनुकरणवाचक क्रिया कहते हैं। जैसे — 'खटखट' से खटखटा, 'ठकठक' से ठकठका, 'चमचम' से चमचमा, 'भनमन' से भनभना....

Book 1.indb 83 21-06-2018 17:12:47

कर्ता, कर्म और भाव की दृष्टि से क्रिया के तीन भेद हैं– 1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य – क्रिया द्वारा कही गयी बात का मुख्य विषय कर्ता हो, तो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्तृवाच्य में क्रिया और कर्ता का सीधा संबंध रहता है। कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया बनती है। जैसे — लड़का पाठ पढ़ता है। लड़के पाठ पढ़ते हैं। लड़की पाठ पढ़ती है। लड़कियाँ पाठ पढ़ती हैं। मैं पाठ पढ़ता हूँ। मैं पाठ पढ़ती हूँ.....

2. कर्मवाच्य – क्रिया द्वारा कही गयी बात का मुख्य विषय कर्म हो, तो उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

कर्मवाच्य में क्रिया और कर्म का सीधा संबंध रहता है। कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया बनती है। कर्ता के साथ 'से' करणकारक चिह्न लगे रहता है। जैसे — मोहन से एक पाठ पढ़ा जाता है। मोहन से दो पाठ पढ़े जाते हैं। मोहन से एक कहानी पढ़ी जाती है। मोहन से दो कहानियाँ पढ़ी जाती हैं।

3. भाववाच्य – कभी-कभी क्रिया द्वारा कही गयी बात का मुख्य विषय न कर्ता होता है, न कर्म होता है और क्रिया का अपना अर्थ ही मुख्य विषय होता है, तो उसे भाववाच्य कहते हैं।

भाववाच्य की क्रिया हमेशा अकर्मक ही रहती है और पुल्लिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में रहती है। जैसे — उस आदमी से चला नहीं जाता। उस औरत से दौड़ा नहीं जाता। मुझसे सोया नहीं गया। तुमसे खेला नहीं जाएगा।

कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य या भाववाच्य में बदलने के लिए क्रिया को सामान्य भूतकाल में लाकर उसके साथ 'जा' लगाया जाता है। कर्मवाच्य में यह क्रिया-रूप कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बनता है और भाववाच्य में हमेशा पुल्लिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में। कर्तृवाच्य का काल ही कर्मवाच्य या भाववाच्य का भी होता है। 'जा' के साथ काल का प्रत्यय लगाया जाता है। कर्ता करणकारक में रहता है। जैसे —

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**	**भाववाच्य**
राम रोटी खाता है।	राम से रोटी खायी जाती है।	–
सरला फल खाती है।	सरला से फल खाया जाता है।	–

Book 1.indb 84 21-06-2018 17:12:47

मैं पाठ पढ़ती हूँ।	मुझसे पाठ पढ़ा जाता है।	–
मैं कहानी पढ़ता हूँ।	मुझसे कहानी पढ़ी जाती है।	–
वह दो पत्र लिखेगा।	उससे दो पत्र लिखे जाएँगे।	–
वे हिंदी बोले।	उनसे हिंदी बोली गयी।	–

ाह बूढ़ी चल नहीं सकती।	–	उस बूढ़ी से चला नहीं जाता।
मैं सुबह-सुबह उठ नहीं सका।	–	मुझसे सुबह-सुबह उठा नहीं गया।
हम तेज़ दौड़ नहीं सकेंगे।	–	हमसे तेज़ दौड़ा नहीं जाएगा।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :-

1. कर्म की दृष्टि से क्रिया के भेद क्या-क्या हैं?
2. नामधातु किसे कहते हैं?
3. 'यह तस्वीर पिताजी ने खींची' – यह वाक्य कर्तृवाच्य है या कर्मवाच्य?

II. सविस्तार उत्तर दीजिए :-

1. क्रिया की परिभाषा देकर कर्म की दृष्टि से क्रिया के भेदों को सोदाहरण समझाइए।
2. क्रिया किसे कहते हैं और बनावट की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं? उदाहरण के साथ लिखिए।
3. कर्ता, कर्म और भाव की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं? सोदाहरण लिखिए।
4. कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य या भाववाच्य में बदलने के नियम क्या हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Book 1.indb 85 21-06-2018 17:12:47

निबंध

34 दूरदर्शन

आजकल के वैज्ञानिक आविष्कारों में दूरदर्शन एक चमत्कार पूर्ण देन है जो अपनी ध्वनि मात्र से नहीं, बल्कि दृश्यों के दर्शन से भी हमें हमारे सामने प्रस्तुत दूरदर्शन की पेटी के एक छोटे-से परदे द्वारा बहलाता है।

दूरदर्शन, दूरस्थ अभिग्राही सेट को चित्रों को पहुँचाने तथा उन चित्रों का उत्पादन करने की प्रक्रिया है। सन् 1926 में जान एल. बैर्ड ने इंगलैंड में इसका अविष्कार किया था। परन्तु भारत में 1965 में इसका आगमन हुआ और 1980-82 में ही यह लोकप्रिय बना। आज तो प्रत्येक नर-नारी और बच्चे की इच्छा है कि उसके घर में एक टेलिविज़न हो। वह दिनों दिन और भी अधिक जनप्रिय हो गया है कि कोई गाँव ऐसा नहीं जहाँ टेलिविज़न घर में, या तहसीली (मुनिसिपल) या पंचायत-घर में न हो।

दूरदर्शन का कार्यक्रम बहुत हद तक रेडियो (आकाशवाणी) के कार्यक्रम से मेल खाता है। एक खास ढंग के टेलि कैमरा नाम के कैमरा में एक व्यक्ति, वस्तु या दृश्य का फोटो खींचा जाता है। फिर वह चित्र हज़ार बिन्दुओं में विकीर्ण किया जाता है। उसके बाद एक-एक बिन्दु के उज्ज्वल तथा काले भाग विद्युत-धारा (एलक्ट्रिक करन्ट) में बदल दिये जाते हैं। फलस्वरूप विद्युत-धारा उज्ज्वल भागों में उत्पन्न किया जाता है, लेकिन काले भागों में नहीं। फिर ये विद्युत-धाराएँ रेडियो लहरों के रूप में बदल दी जाती हैं और प्रसारित की जाती हैं। अभिग्राही सेट (रिसीविंग सेट) का आँटेन्ना इन रेडियो लहरों को पकड़ लेता है और टेलिविज़न सेट के अन्दर जड़े हुए पुरजे फिर उन्हें विद्युत-धारा के रूप में बदल देते हैं। ये विद्युत-धाराएँ टेलिविज़न सेट में जड़े एक ट्यूब में एलक्ट्रोनिक लहरों को उत्पन्न करती हैं। एलेक्ट्रन के प्रभाव से उस ट्यूब के छोर के एक खास वस्तु को वह ज्योतित करता है। इस प्रकार एक व्यक्ति या वस्तु या दृश्य का फ़ोटो जो टेलिविज़न केन्द्र से प्रसारित किया गया है, तुरन्त ग्रहण किया जाता है और दूरस्थ टेलिविज़न रिसीविंग सेट के पट में प्रतिबिम्बित् किया जाता है। टेलिविज़न के कार्यक्रम प्रसारक या उपग्रह-यंत्रों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं।

टेलिविज़न भारत में सन् 1951 में आया था जबकि प्रथम केन्द्र दिल्ली में स्थापित किया गया था। परन्तु सार्वजनिक प्रसार केन्द्र अगस्त 1965 में ही काम करने लगा। अगस्त 18, 1957 में भारत के वैज्ञानिकों ने जो अन्तरिक्ष के अनुसन्धान में लगे हुए थे, आर्यभट्टा नामक उपग्रह को उछाल दिया था। उसकी मदद से टेलिविज़न के कार्यक्रम अगस्त 1, 1975 से

Book 1.indb 86 21-06-2018 17:12:47

आरंभ हुए। जब 'रोहिणी', इनसाट 1 बी और 2 बी अन्तरिक्ष में सफलतापूर्वक उछाले गये तब भारतीय टेलिविज़न का परिवेश विस्तृत हुआ। इस तरह यह विस्तार बढ़ते-बढ़ते आज अनगिनत प्रसार केन्द्र खोले गये हैं।

आरंभ में टेलिविज़न सेट काला और सफ़ेद चित्र देनेवाले रहे। परन्तु अब रंगीन सेट भी उत्पन्न हुए हैं। ये रंगीन सेट प्राकृतिक चित्रों को उनके स्वाभाविक रूप में हमारी आँखों के सामने लाकर हमारे मन को और अधिक बहलाते हैं और हमें वास्तविक ज्ञान को प्रदान करते हैं।

मनोरंजन के साधन तथा आम जनता को शिक्षित करने के उपकरण के रूप में टेलिविज़न का आज बड़ा महत्त्व है। वह हमें वस्तुओं को, दृश्यों को या घटनाओं के बारे में सुनने और देखने में, वह भी हवादार कमरे में, आनन्द प्रदान करता है। इसके लिए हमें अब सिनेमा-घर जाने की ज़रूरत नहीं है। हिमालय पर पर्वतारोहियों का आक्रमण, दक्षिण ध्रुव की ओर अभियान, मैदान में क्रिकेट या हाकी या फुटबाल अथ्वा टेन्निस मैच को अथ्वा राजनीतिज्ञों के सम्मेलनों को हम घर बैठे देख सकते हैं। ये सब हमारे शैक्षिक क्षितिज के अन्तर्गत आ जाते हैं।

टेलिविज़न शैक्षिक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति को लाने में सफल हुआ है। उच्च शिक्षा खासकर वैज्ञानिक, तकनिकी या भौगोलिक विज्ञान में टेलिविज़न बहुत बड़ी सहायता पहुँचाता है। शल्य-चिकित्सा भी टेलिविज़न द्वारा सिखायी जाती है। टेलिविज़न समुद्रविज्ञान के अनुसंधान को सुगम बना चुका है। उसकी मदद से मानव ग्रहों के संबंध में अपनी जानकारी बढ़ा चुका है। इतना ही नहीं, मानवकृत उपग्रहों को अन्तरिक्ष में उछालकर भूमि पर होनेवाले मौसम के परिवर्तन की पूर्व जानकारी हम पा सकते हैं।

हमारा भारत विकासशील राष्ट्र है। अतः हमारे देश में टेलिविज़न को कई महत्वपूर्ण काम अदा करने हैं। हमारे देश की सर्वांगीण उन्नति में हमारे जीवन के प्रत्येक विभाग में जैसे खेतीबारी, उद्योग-धंधे, तकनिकी विज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान, समुद्र विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान सबमें टेलिविज़न हमें मदद दे सकता है।

हमारे देश में टेलिविज़न के केन्द्रों की प्रगति में भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। फिर भी हमारे टेलिविज़न के कार्यक्रमों पर और अधिक ध्यान देकर देश की प्रगति के कामों में उन्हें सहायक बनाना अत्यन्त आवश्यक है।

Book 1.indb 87 21-06-2018 17:12:47

35 व्यक्तिगत पत्र

उल्लास-यात्रा पर जाने की अनुमति माँगकर पिताजी के नाम पर एक पत्र लिखिए।

दिनांक :

10, नेताजी रोड़

चेन्नई- 1.

पूज्य पिताजी,

प्रणाम,

आशा है कि घर में सब सकुशल होंगे। यह हमारे अंतिम साल है। इसलिए अगले महीने में हमारे स्कूल के पचास विद्यार्थी उल्लास-यात्रा पर जानेवाले हैं। खर्च लगभग एक हज़ार रुपये होंगे। आप मुझे उल्लास यात्रा जाने की अनुमति दें।

पूज्य माताजी को मेरा प्रणाम।

आपका प्रिय पूत्र

एन. अजय

Unit 35.indd 88 22/06/18 5:08 PM

अनुवाद अभ्यास

36 भविष्यतकाल

FUTURE TENSE

अंग्रेज़ी में लिखिए:-

1.	हम पढ़ेंगे	-	We will read
2.	वह आयेगा	-	He will come
3.	तुम जाओगे	-	You will go
4.	वे लिखेंगे	-	They will write
5.	मैं खाऊँगा	-	I will eat

हिंदी में लिखिए:-

1.	We are listen.	-	हम सुनेंगे।
2.	Teacher will teach	-	शिक्षक सिखाएँगे।
3.	Child will cry	-	बच्चा रोयेगा।
4.	Mother will cook	-	माँ रसोई बनाएँगीं।
5.	Tailor will stitch	-	दर्जी सिएगा।

Book 1.indb 89 21-06-2018 17:12:47

HINDI READER -CLASS -VI

Text Book Committee

Chair Person :

DR. M. SESHAN,
Professor(Retd.) Head of the Dept. (Hindi)
D.G. VAISHNAV COLLEGE, ARUMBAKKAM,
Chennai – 106

Reviewer :

Dr. KOKILA P.C.
Associate Professor(Retd.) Head of the Dept. (Hindi)
PRESIDENCY COLLEGE, CHENNAI 600 005

Authors :

ANANDAKRISHNAN S, M.A, M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

SATYANARAYANAN, S M.A., M.Ed.,
PG ASST. in Hindi(Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. GABRIEL GOVINDARAJU, M.A, BSc, B.Ed.,
Lecturer in Hindi(Retd.)
Navalar Nedunchezhian GHSS, Lawspet, Puducherry

MURALIDHARAN.S, P.G. ASST. M.A, B.Ed.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashoknagar, Chennai

MALLIKA. O.V.S. M.A, M.Phil. B.Ed.
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

Coordinators:

CHANDRASEKAR K.
Lecturer, DIET , Chennai 6

RADJAMOHANE R, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi

Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Edn., Puducherry.

Art and Design Team

Layout Design
THY designers & Computers

Inhouse-QC
Gopu Rasuvel
Manohar Radhakrishnan
Balaji
Jerald wilson

Wrapper Design
Kathir Arumugam

Typeset
Jayashree. S

Co-ordination
Ramesh Munisamy

This book has been printed on 80 G.S.M.
Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

Unit 36.indd 90 06-07-2018 10:01:20

Notes

Book 1.indb 91 21-06-2018 17:12:47

Notes

Book 1.indb 92 21-06-2018 17:12:47

Notes

Book 1.indb 93 21-06-2018 17:12:47

Notes

Book 1.indb 94 21-06-2018 17:12:47

Notes

Book 1.indb 94 21-06-2018 17:12:47

Notes

Book 1.indb 94 21-06-2018 17:12:47